सांध्य दैनिक
4PM
जिद...सच की
मूल्य ₹ 3/-
www.4pm.co.in www.facebook.com/4pmnewsnetwork @Editor_SanjayS YouTube @4pm NEWS NETWORK
● वर्ष: 12 ● अंक: 73 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शनिवार 18 अप्रैल, 2026

अगर आपके लहू में रोष नहीं है, तो ये पानी है जो आपकी रगों में बह रहा है। ऐसी जवानी का क्या मतलब अगर वो मातृभूमि के काम ना आए।
-चंद्रशेखर आजाद

जीत की हैट्रिक लगाना चाहेगी... 7
बिहार में सम्राट की राह नहीं होगी... 3
11 साल के अनुभव बताता है भाजपा... 2

बैकडोर एजेंडा ध्वस्त

धुआं-धुआं रणनीति अजेय छवि चकनाचूर

131 वां संविधान संशोधन बिल 2026 लोकसभा में पास नहीं हो पाया।

- संविधान संशोधन विधेयक खारिज
- कांग्रेस ने बताया विपक्ष की जीत, कहा- महिला आरक्षण पर समर्थन अटूट

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कभी-कभी संसद की दीवारें सिर्फ बहस नहीं सुनतीं इतिहास की करवट भी दर्ज करती हैं। कल का दिन कुछ ऐसा ही था। जब संविधान संशोधन विधेयक का खारिज होना महज एक विधायी प्रक्रिया का अंत नहीं बल्कि सत्ता की एक सोची समझी चाल पर लोकतंत्र की निर्णायक चोट बन गया।

विपक्ष ने इसे सीधे-सीधे सरकार का बैकडोर एजेंडा बताया। एक ऐसा एजेंडा जो सामने से नहीं बल्कि चुपचाप संविधान की आत्मा में सेंध लगाने की कोशिश कर रहा था। और जब यह प्रयास नाकाम हुआ तो सबसे तेज आवाज दक्षिण से उठी एक ऐसी आवाज जिसने सत्ता के गलियारों में गूंज पैदा कर दी। यह सिर्फ हार नहीं थी। यह एक संदेश था। साफ तीखा और असहज करने वाला कि भारत का संविधान किसी एक सत्ता एक विचारधारा या एक राजनीतिक सुविधा का दस्तावेज नहीं है। यह उन विविधताओं का संतुलन है जो उत्तर से दक्षिण पूरब से पश्चिम तक फैली हुई हैं।

संविधान संशोधन विधेयक खारिज होने पर विपक्ष का दावा दक्षिणी राज्यों की जीत

इंदिरा के पोते ने कर दिया कमाल जो कहा वह करके दिखाया नहीं पास होने दिया विधेयक

संशोधन या संविधान का पुनर्लेखन

विपक्ष का सबसे बड़ा आरोप यही रहा कि यह विधेयक संशोधन के नाम पर पुनर्लेखन का प्रयास था। सवाल उठाया गया कि क्या सरकार धीरे धीरे संविधान की मूल भावना को बदलने की दिशा में काम कर रही है। क्योंकि इतिहास गवाह है कि संविधान में हर संशोधन सिर्फ एक कानूनी बदलाव नहीं होता वह सत्ता और जनता के बीच के रिश्ते को भी परिभाषित करता है। और जब यह रिश्ता एकतरफा होने लगे तो लोकतंत्र का संतुलन डगमगाने लगता है। विपक्ष के नेताओं ने संसद के भीतर और बाहर एक ही बात दोहराई कि यह विधेयक जनता के अधिकारों को सीमित करने और राज्यों की स्वायत्तता को कमजोर करने की कोशिश थी। क्या यह अतिशयोक्ति थी या सचमुच कोई गहरी परत थी जिसे सरकार खुलकर सामने नहीं लाना चाहती थी?

12 सालों में पहली बार ऐसा हुआ

कल की शाम भारत के संसदीय इतिहास में एक बड़े उलटफेर की गवाह बनी। मोदी सरकार द्वारा पेश किया गया 131वां संविधान संशोधन बिल 2026 लोकसभा में पास नहीं हो पाया। पिछले 12 सालों में यह पहला मौका है जब मोदी सरकार का कोई संविधान संशोधन बिल सदन में गिरा हो। दो दिनों तक चली लंबी बहस और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की अपीलों के बावजूद सरकार जरूरी आंकड़ों का जुगाड़ नहीं कर पाई। सदन में वोटिंग के दौरान बिल के पक्ष में 298 वोट पड़े जबकि विरोध में 230 सदस्यों ने बटन दबाया। पिछले 12 सालों में यह पहली बार देखा गया कि विपक्ष ने इतनी सटीक रणनीति के साथ सरकार को घेरा। मल्लिकार्जुन खरगे, अखिलेश यादव और ममता बनर्जी जैसे दिग्गज नेताओं के बीच हुए बेहतर तालमेल ने सरकार के रणनीतिकारों को चौंका दिया। विपक्ष ने एक सुर में परिसीमन को चुनावी नक्शा बदलने की साजिश बताकर वोटिंग में सरकार को पछाड़ दिया।

सरकार की चुप्पी रणनीति या स्वीकारोक्ति?

विधेयक के खारिज होने के बाद सबसे ज्यादा चर्चा सरकार की प्रतिक्रिया को लेकर हुई। न कोई तीखा पलटवार न कोई आक्रामक बयान बस एक नियंत्रित संतुलित चुप्पी। लेकिन राजनीति में चुप्पी भी बोलती है। सरकार की चुप्पी पर सवाल उठने लगे है कि क्या यह चुप्पी एक रणनीतिक विराम है? या फिर एक ऐसी स्वीकारोक्ति जिसे शब्दों में ढालना मुश्किल हो रहा है? क्योंकि अगर यह विधेयक इतना ही जनहितकारी था जैसा कि दावा किया जा रहा था तो उसके खारिज होने पर सत्ता की बेचैनी साफ दिखनी चाहिए थी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं सरकार की तरफ से जो दिखा वह एक अजीब सी ठंडक दिखाई दी। सरकारी चुप्पी पर और भी कई सवाल उठ रहे है कि क्या सरकार ने जनबूझकर हार स्वीकार की है। क्या इसमें में भी कोई रणनीति और राजनीतिक चाल है क्योंकि राजनीति में हार कर भी बाजी जीती जाती है।

संबंधित खबरें पेज 8 पर

11 साल के अनुभव बताता है भाजपा भरोसा करने लायक नहीं : अखिलेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में तीन विधेयकों पर चर्चा के दौरान एक वक्त ऐसा आया जब लगा कि मानों सहमति बन गई है लेकिन समाजवादी पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष अखिलेश यादव के एक बयान ने सदन का पूरा माहौल बदल दिया। सपा प्रमुख ने कहा कि बीजेपी लिख कर दे कि महिला पीएम बनाएंगे तब भी समर्थन नहीं करेंगे। कन्नौज सांसद अखिलेश यादव ने कहा कि 11 साल के जो अनुभव रहे, अगर बीजेपी ये लिख कर दे देगी कि हम महिला पीएम बनाएंगे तब भी इनका भरोसा नहीं करेंगे।

दरअसल, गृह मंत्री अमित शाह ने कहा कि विपक्ष बताए क्या बिल पारित करने के लिए सहमत हो? सरकार 50 प्रतिशत सीट बढ़ाने के लिए तैयार है।1

» बोले सपा प्रमुख- बीजेपी लिख कर दे कि महिला पीएम बनाएंगे तब भी समर्थन नहीं करेंगे

प्रदर्शन के लिए कम से कम 12 महिलाओं को तो भेजती भाजपा

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव ने सपा मुख्यालय पर प्रदर्शन को लेकर कहा कि भाजपा वाले लगभग 12 करोड़ महिलाओं वाले उत्तर प्रदेश में प्रदर्शन करने के लिए कम से कम 12 महिलाओं को तो भेजते।

घंटा दीजिए हम संशोधन कराने के लिए तैयार है, हमें 50 प्रतिशत सीट बढ़ानी ही हैं, हमें कोई चोरी नहीं करनी है। इससे पहले भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता और सांसद केसी वेणुगोपाल ने कहा था कि सरकार लिखकर दे कि सभी राज्यों में 50 फीसदी सीटें बढ़ेंगी और 2026 के जनगणना के आधार पर परिसीमन हो।

इसके जवाब में शाह ने कहा कि हम लिखकर देने को तैयार हैं कि सीटें 50 फीसदी बढ़ेंगी लेकिन हम 2026 की जनगणना के आधार पर परिसीमन के मांग के झांसे में नहीं आने वाले।

अखिलेश के इस जवाब के बाद गृह मंत्री ने कहा कि ये वोट नहीं देंगे तो महिला आरक्षण बिल गिर जाएगा लेकिन इस देश की महिलाएं देख रही है कि उनके रास्ते का रोड़ा कौन है? चुनाव में माताएं हिसाब मांगेगी, भागने के लिए रास्ता नहीं मिलेगा. शाह ने कहा कि विपक्ष मुस्लिम महिलाओं को भी आरक्षण के नाम पर भी भ्रम फैला रहा है भारतीय संविधान धर्म के आधार पर आरक्षण नहीं देता है। गृह मंत्री ने कहा कि इंडिया अलायंस तुष्टीकरण के कारण ऐसी बात करता है। संविधान के किस आर्टिकल के हिसाब से आप धर्म के आधार पर आरक्षण देंगे? धर्म के आधार पर आरक्षण हम ना देंगे ना किसी को देने देंगे।

अपर्णा यादव का विस पर प्रदर्शन, सपा और कांग्रेस का झंडा जलाया

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। महिला आरक्षण बिल को लेकर सियासत तेज हो गई। अपर्णा यादव ने

विधानसभा के सामने सपा और कांग्रेस का झंडा जलाकर विरोध जताया। संसद में महिला आरक्षण बिल पारित न हो पाने को लेकर सियासत तेज हो गई है। राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष अपर्णा यादव ने विधानभवन के सामने समाजवादी पार्टी और कांग्रेस का झंडा जलाकर विरोध प्रदर्शन किया।

उन्होंने कहा कि वर्षों से लंबित इस बिल के पास न होने से महिलाओं को उनका अधिकार नहीं मिल पा रहा है। अपर्णा ने आरोप लगाया कि विपक्षी दलों की राजनीतिक इच्छा शक्ति की कमी के कारण महिला आरक्षण बिल अटका हुआ है। उधर, राज्य महिला आयोग की सदस्यों ने समाजवादी पार्टी के प्रदेश कार्यालय पर भी प्रदर्शन किया। महिला आयोग की ओर से इस मामले में शनिवार को बड़ा प्रदर्शन करने की बात भी कही गई है।

सीएम सम्राट चौधरी से मिले नीतीश कुमार

मुलाकात करीब 20 मिनट तक चली, राजनीतिक स्थिति और सरकार के कामकाज पर चर्चा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार की राजनीति में हलचल के बीच पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने शनिवार को देशरत्न मार्ग स्थित सरकारी आवास पर मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी से मुलाकात की। यह मुलाकात करीब 20 मिनट तक चली, जिसमें देश और राज्य की मौजूदा राजनीतिक स्थिति और सरकार के कामकाज पर चर्चा हुई।

15 अप्रैल को मुख्यमंत्री पद की शपथ लेने के बाद यह पहली बार है जब सम्राट चौधरी और नीतीश कुमार आमने-सामने मिले। इस दौरान उपमुख्यमंत्री विजय कुमार चौधरी और बिजेंद्र यादव से भी बातचीत हुई। मुख्यमंत्री आवास पर हुई इस मुलाकात की तस्वीरें सम्राट चौधरी ने अपने आधिकारिक एक्स (पूर्व ट्विटर) हैंडल पर साझा कीं। तस्वीरों में नीतीश कुमार सहज और प्रसन्न नजर आए। यहां तक कि उन्होंने सम्राट चौधरी के कंधे पर हाथ रखकर आत्मीयता भी दिखाई। सम्राट चौधरी ने पोस्ट में लिखा कि उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री से मार्गदर्शन प्राप्त किया।

मुलाकात के बीच राज्य की शराबबंदी नीति भी चर्चा के केंद्र में रही। मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी ने स्पष्ट किया कि बिहार में शराबबंदी कानून सख्ती से जारी रहेगा। उन्होंने कहा कि यह फैसला पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की सोच का हिस्सा है और प्रधानमंत्र भी इस पहल की सराहना कर चुके हैं।

अनंत सिंह समेत कई नेताओं ने उठाए सवाल

इधर, मोकामा से जदयू विधायक लगातार शराबबंदी खत्म करने की मांग उठा रहे हैं। उनका तर्क है कि प्रतिबंध के बावजूद लोग शराब का सेवन कर रहे हैं। और इसके स्थान पर अन्य खतरनाक नशे की ओर बढ़ रहे हैं, जिससे समाज पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। कई अन्य नेताओं ने भी इस मुद्दे पर सवाल उठाए हैं, जिससे राज्य में शराबबंदी को लेकर बहस तेज हो गई है।

27 के विधानसभा चुनावों के चलते भाजपा करवा रही छापेमारी : मान

» उपचुनाव में हार का बदला ले रही बीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। पंजाब के मुख्यमंत्री भगवंत मान ने भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) और आयकर विभाग की छापेमारी के जरिए विपक्ष को परेशान करके 27 के विधानसभा चुनावों की तैयारी शुरू करने का आरोप लगाया। मान ने आम आदमी पार्टी (आप) के नेताओं को निशाना बनाकर की गई हालिया ईडी कार्रवाई की आलोचना की। उन्होंने बताया कि ईडी ने हाल ही में राज्यसभा सांसद अशोक मित्तल के घर पर छापा मारा था, जो लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी के संस्थापक हैं, जहां 35 से अधिक देशों के हजारों छात्र पढ़ते हैं।

मान ने कहा कि उन्हें इसलिए निशाना बनाया गया क्योंकि वे आम आदमी पार्टी से हैं। ईडी संजीव अरोड़ा के घर पर छापा मार रही है। उन्होंने यहां उपचुनाव में भाजपा को हराया था। आज वे निशाने पर आ गए हैं। अरोड़ा पंजाब के कैबिनेट मंत्री हैं और आम आदमी पार्टी के उन नेताओं में से एक हैं जिन पर ईडी ने छापा मारा है। मान ने कहा कि ये कार्रवाइयां 2027 के विधानसभा चुनावों से पहले भाजपा की तैयारियों का हिस्सा हैं। आबकारी नीति मामले पर बोलते हुए उन्होंने जोर दिया कि आम आदमी पार्टी के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल और नेता मनीष सिसोदिया को अदालत ने बरी कर दिया क्योंकि मामला मनगढ़ंत था, जिसके परिणामस्वरूप कोई दोष सिद्ध नहीं हुआ।

भगवंत मान ने कहा कि इसका मतलब है कि भाजपा ने 27 के विधानसभा चुनावों की तैयारी शुरू कर दी है। उन्होंने ईडी और आयकर विभाग को भेजना शुरू कर दिया है और विपक्ष को डराना-धमकाना शुरू कर दिया है। भाजपा को चुनाव लड़ने के लिए 117 लोग नहीं मिल रहे हैं। लोकतंत्र की हत्या की जा रही है; मैं इसकी निंदा करता हूं। केवल गैर-भाजपा सरकारों को ही फंसाया जा रहा है। छापों से कुछ भी हासिल नहीं होता। अरविंद केजरीवाल और मनीष सिसोदिया को सम्मानपूर्वक रिहा कर दिया गया। एक मनगढ़ंत मामले के आधार पर उनके खिलाफ मुकदमा शुरू करने का कोई तरीका नहीं था। अगर कोई उनके सामने झुकता है, तो वह पूरी तरह से बरी हो जाता है।

बसपा तोलमोल कर करेगी प्रत्याशियों का चयन

» एसआईआर की सूची के आधार पर बसपा बनाएगी रणनीति

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। विस चुनाव 27 के लिए बसपा ठोकबजाकर ही कोई फैसला करेगी। सूत्रों के अनुसार बसपा मतदाता सूची पुनरीक्षण अभियान से हुए फायदे-नुकसान का आकलन कर रही है। बहुजन समाज पार्टी विशेष प्रगाढ़ पुनरीक्षण अभियान (एसआईआर) से हुए नफा-नुकसान को भांप रही है।

पार्टी ने हाल ही में गठित की गईं 15 हजार बूथ कमेटियों से इस बाबत रिपोर्ट मांगी है, जिसके आधार पर आगे की रणनीति तय की जाएगी। बता दें कि बसपा ने इस अभियान में

सक्रिय रूप से भाग लिया था ताकि उसके समर्थकों का नाम मतदाता सूची में बरकरार रहे।

पार्टी सूत्रों की मानें तो एसआईआर अभियान में जिन पदाधिकारियों ने सक्रिय भूमिका निभाई, उन्हें टिकट चयन में तवज्जो दी जाएगी। खासकर जिलों में जिन संभावित प्रत्याशियों को प्रभारी बनाया गया था, उनके बारे में रिपोर्ट मिलने के बाद उनकी दावेदारी पर फैसला लिया जाएगा। बसपा सुप्रीमो मायावती खुद इस मामले की गहनता से समीक्षा कर रही हैं। उन्होंने पार्टी प्रदेश अध्यक्ष विश्वनाथ पाल से इस बाबत सभी जिलों से रिपोर्ट मंगाने को कहा है। खासकर पार्टी के प्रभाव वाले क्षेत्रों में मतदाताओं की संख्या कम होने के बारे में बताने को कहा गया है ताकि जिनके नाम मतदाता सूची में शामिल होने से रह गए हैं, उनको आगे जुड़वाया जा सके। बता दें कि बसपा सुप्रीमो ने बीती 7 फरवरी को राजधानी में पार्टी पदाधिकारियों की बैठक में एसआईआर के कार्यों में विशेष रुचि दिखाने का निर्देश दिया था। उन्होंने बहुजन समाज को जागरुकता दिखाते हुए इस अभियान में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने की अपील की थी।

बिहार में सम्राट की राह नहीं होगी आसान

राज्य की बदहाली दूर करना सबसे बड़ा काम

- विपक्ष के साथ अपनों से मिलेगी चुनौती
- सहयोगी जदूय, चिराग का भी रहेगा दबाव
- राजद-कांग्रेस व अन्य भी रखेंगे कड़ी नजर

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। आखिरकार बिहार में भाजपा का सीएम मिल गया। सम्राट चौधरी वहां पर मुख्यमंत्री होंगे। पर क्या उनके लिए आगे की राह आसान होगी ये कहना जलदबाजी होगी। जदयू के दिग्गज नेता नीतीश कुमार की छवि के सामने उनकी छवि कमतर है। सबसे बड़ी बात जदयू सामाजिक न्याय के सिद्धांत को मानने वाली पार्टी है जबकि भाजपा कोर हिंदुत्व की राजनीति करती है ऐसे में आने वाले समय में दोनों के बीच ऐसे मुद्दों पर टकराहट होने के आसार है। आने वाले समय में देखना होगा की नए सीएम अपने सहयोगियों के साथ कैसे तालमेल बिठाते हैं। ऐसा नहीं कि उन्हें केवल सहयोगियों से चुनौती मिलेगी उन्हे अपनी पार्टी के अंदर भी विरोध या गुटबाजी झेलनी पड़ सकती है।

सबसे बड़ी बात नीतीश की जनता के बीच में स्वीकार्यता व लोकप्रियता उसके बराबर क्या वह जनता के मन में जगह बना पाएंगे। इसके अलावा बिहार की तरक्की व खुशहाली की क्या योजना रहेगी ये सब भी देखने वाला होगा। वहीं विपक्ष के निशाने पर भी हो होंगे। क्योकि उनका अतीत उनका पीछा नही छोड़ेगा। क्योंकि पीके व तेजस्वी उन पर अभी से हमलावर हैं। कुल मिलाकर बिहार के नए सम्राट को फूलों की सेज नहीं, बल्कि कांटों का ताज मिला है। चाहे पूर्व मुख्यमंत्री नीतीश कुमार हों, या पूर्व मुख्यमंत्री दम्पत्ति लालू प्रसाद और राबड़ी देवी, कभी भी चैन पूर्वक राज नहीं कर सके। लिहाजा, मौजूदा मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को भी उन जातीय और साम्प्रदायिक चुनौतियों से जूझना होगा, जो बिहार के विकास में शुरू से ही बाधक समझी गई हैं। लेकिन जिस प्रकार से आधुनिक बिहार के निर्माता और प्रथम मुख्यमंत्री श्री कृष्ण सिन्हा को कांग्रेस के सहयोग से लंबे समय तक राज करते हुए जनसेवा का मौका मिला, वैसी ही मौजूदा मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को भाजपा के सहयोग से जनसेवा का मौका मिलेगा। उन्होंने कहा भी है कि पार्टी ने उन्हें पद नहीं, जनसेवा का अवसर दिया है, इसलिए विकास, सुशासन और समृद्धि उनके शासन का मूलमंत्र होगा। बिहार में 26 साल पहले हुए राज्य विभाजन के बाद औद्योगिक आधार छोटा हुआ है, क्योंकि अधिकांश बड़े उद्योग-धंधे झारखंड के हिस्से में चले गए। ततपश्चात छोटे और कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, कृषि आधारित उद्योग तकनीकी पिछड़ेपन और वित्तीय अभाव के कारण इनका समग्र विस्तार नहीं हो पा रहे हैं।

बुनियादी ढांचा और शहरीकरण में निवेश

बिहार में सड़क नेटवर्क, बिजली, जल सुविधा, नालियाँ, जनस्वास्थ्य और शहरी बुनियादी ढांचा अभी भी प्रमुख रूप से कमजोर जगह बनी हुई हैं। चाहे स्थापित शहर हों या कस्बाई शहर, यहां शहरीकरण बहुत धीमी गति से हो रहा है, जिससे औद्योगिक सेवा अर्थव्यवस्था को उतना बल नहीं मिल पा रहा जितना दूसरे विकसित राज्यों में मिला है। इसलिए नए मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को इस ओर विशेष ध्यान देना होगा, क्योंकि रोजगार के सृजन में इस क्षेत्र का बड़ा होता है।

नीतीश कुमार ने बिहार को दिया नया आकार

बिहार के विकास में श्रीकृष्ण सिन्हा के बाद नीतीश कुमार ने एक बड़ी रेखा खींचने की कोशिश की, प्रगति नजर भी आई, लेकिन महाराष्ट्र, गुजरात, तमिलनाडु, कर्नाटक, आंध्रप्रदेश और हाल के वर्षों में उत्तर प्रदेश के विकास को देखा जाए तो अब भी बिहार के विकास में कई बड़ी बड़ी चुनौतियाँ बाकी हैं, जो आंकड़ों और राज्य की सामाजिक आर्थिक स्थिति को देखने पर साफ दिखती हैं। इसलिए भाजपा की सरकार के सुलझे हुए और समावेशी प्रवृति वाले मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को भी बिहार के समग्र विकास के लिए निम्नलिखित चुनौतियों से जूझना होगा। लेकिन अपने मृदु स्वभाव से वे एक एक करके इनसे पार पा जाएंगे, ऐसा मुझे दृढ़ विश्वास है।

कृषि व उत्पादकता बढ़ाने पर जोर देना होगा

कृषि पर अत्यधिक निर्भरता के चलते उत्पादकता बढ़ाने पर जोर देना होगा ध्यान यद्यपि बिहार की आबादी का बड़ा हिस्सा अभी भी कृषि पर निर्भर है, लेकिन उत्पादकता और आय दोनों ही अपेक्षाकृत कम हैं। ऐसा इसलिए कि उत्तर बिहार 4 महीना बाढ़ से आक्रांत रहता है और तभी दक्षिण बिहार सूखा से जूझ रहा होता है। खेती और बागवानी यहां पर होती तो है, लेकिन भंडारण सुविधाएँ, बाढ़ प्रबंधन, सिंचाई व्यवस्था, जलवायु परिवर्तन और बारहमासी सिंचाई की सीमित पहुंच जैसे कारकों के कारण कृषि अभी भी बहुत जोखिम भरी और कम लाभ वाली साबित होती है। लिहाजा किसानों और मजदूरों के बच्चे परदेश कमाने चले जाते हैं और अपनी उद्यमिता से सबको सुख पहुंचाते हैं।

बिहार को चुनौतियों से बाहर निकालना होगा टॉस्क

पहला, निर्धनता, रोजगार और मानव पूंजी के नजरिए से विकास आंकड़े बताते हैं कि बिहार, भारत के सबसे कम आय वाले राज्यों में शुमार है, जहां गरीबी दर अभी भी काफी ऊँची है और रोजगार की गुणवत्ता कमजोर है। समझा जाता है कि शिक्षा और स्वास्थ्य के क्षेत्र में निवेश कम होने के कारण यहां की मानव पूंजी कमजोर है- साक्षरता और स्किल लेवल अभी भी देश के स्तर से काफी नीचे हैं, जिससे युवाओं को अच्छे रोजगार के अवसर मिलने में दिक्कत होती है। ऐसे में यदि अपराध, जातीय सोच और सांप्रदायिक मिजाज को हतोत्साहित करके इन लक्ष्यों को पाया जा सकता है। इसके लिए अप्रवासी बिहारियों और बिहार मूल के एनआरआई को आकर्षित करने वाली योजनाओं को बनाना होगा और उनपर दृढ़तापूर्वक अमल करना होगा।

औद्योगिक विकास पर ध्यान देना होगा

बिहार में राज्य विभाजन के बाद औद्योगिक आधार छोटा हुआ है, क्योंकि अधिकांश बड़े उद्योग-धंधे झारखंड के हिस्से में चले गए। ततपश्चात छोटे और कुटीर उद्योग, हस्तशिल्प, कृषि आधारित उद्योग तकनीकी पिछड़ेपन और वित्तीय अभाव के कारण इनका समग्र विस्तार नहीं हो पा रहे हैं। इस स्थिति को बदलना होगा। इस कारण और निजी निवेश की दृष्टि से बिहार अभी भी निवेश अनुकूल राज्यों की पहली पंक्ति में नहीं है, बल्कि तेजी के साथ उद्योग बढ़ाने की चुनौती बरकरार है। ऐसे में भाजपा के केंद्रीय नेतृत्व और राज्य नेतृत्व को चाहिए कि वह महाराष्ट्र और गुजरात की तर्ज पर बिहार-उत्तर प्रदेश में औद्योगिक विकास की गति तेज करे, क्योंकि इन दोनों राज्यों में औद्योगिक रफ्तार तेज होने से लुक ईस्ट की विदेश नीति को मजबूत आधार मिलेगा।

जनस्वास्थ्य और सार्वजनिक सेवाएँ बेहतर करना

बहार के शहरी इलाकों की अपेक्षा ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य सेवाएँ बेहद कमजोर हैं- खासकर डॉक्टर आबादी अनुपात कम, स्वास्थ्य केंद्रों की संख्या पर्याप्त नहीं है और कुपोषण जैसी समस्याएँ अभी भी गंभीर बनी हुई हैं। इसी तरह पीडीएस राशन, योजनाओं के वितरण में धांधली, रिसाव और कार्यान्वयन की कमजोरी विकास के लाभों को गरीबों तक पहुँचने से रोकते हैं। इस स्थिति में अमूलचूल बदलाव लाना होगा, ताकि स्थिति बदले।

तेजस्वी यादव बोले- सीएम, बिहार को बदहाली से निकाले

नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव ने सोशल मीडिया पर लिखा है, सम्राट चौधरी द्वारा आज मुख्यमंत्री नीतीश कुमार को गद्दी से उतारने की अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करने पर बधाई तथा मुख्यमंत्री बनने पर हार्दिक शुभकामनाएं। आशा है कि नए माननीय मुख्यमंत्री जी इस कड़वे, अप्रिय एवं कठोर तथ्य से पूर्ण रूप से अवगत होंगे कि वर्षों के शासन उपरांत भी नीति आयोग के अधिकांश मानकों, सतत विकास के सभी सूचकांकों सहित गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, बेहतर स्वास्थ्य व्यवस्था, ध्वस्त विधि व्यवस्था, आय-निवेश, खर्च-खपत, नौकरी-रोजगार, गरीबी-पलायन, एक समान प्रगति-एकरूप संवृद्धि तथा मानव विकास के तमाम संकेतकों में बिहार राष्ट्रीय औसत से अत्यधिक कम और बहुत पीछे है। आशा है कि नए मुख्यमंत्री श्री सम्राट चौधरी जी बिहार की उन्नति, सुख-समृद्धि, शांति, सौहार्द, सुरक्षा और सर्वांगीण सुधार के लिए संकल्पित होकर सशक्त तरीके से काम करेंगे तथा बाहरियों के दिशा निर्देशों के आगे बिहारियों के स्वाभिमान को गिरवी नहीं रखेंगे। प्रादुर्भाव से समाजवादी श्री सम्राट चौधरी जी को पुनः हार्दिक शुभकामनाएं।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_Sanjay

जिद... सच की

पुलिस की बेलगामी पर अंकुश लगे

अदालतें न हो पुलिस की बेलगामी पर अंकुश लगाना मुश्किल हो जाता है। पुलिस कस्टडी में मौत के मामले दिन पर दिन बढ़ते जा रहे हैं। इसी बीच देश के न्यायालयों ने एक बार फिर पुलिस का वीभत्स चेहरा उजागर कर दिया है। आम लोगों की सुरक्षा के गठित किया गया पुलिस तंत्र किस कदर तानाशाह बन गया है, अदालतों के फैसलों ने इसे बेनकाब किया है। मदुरै की एक अदालत ने सातानुकुलम पुलिस स्टेशन में बाप-बेटे की मौत के मामले में 9 लोगों को फांसी की सजा सुनाई है। इसके अलावा सभी दोषियों पर भारी जुर्माना भी लगाया गया है। तूतीकोरिन जिले के सातानुकुलम के व्यापारी जयराज और उनके बेटे बेनिक्स को 19 जून 2020 को कोरोना काल के दौरान पुलिस ने हिरासत में लिया और बुरी तरह पीटा। इसके बाद 21 जून को दोनों को कोविलपट्टी जेल में रखा गया। 22 जून की रात करीब 9 बजे बेनिक्स की मौत हो गई, जबकि अगली सुबह जयराज की भी मौत हो गई। इस मामले ने पूरे देश में बड़ा हंगामा खड़ा कर दिया। इसके बाद मद्रास हाईकोर्ट की मदुरै बेंच ने खुद संज्ञान लेते हुए पुलिस से रिपोर्ट मांगी।

बाद में यह मामला सीबीआई को सौंप दिया गया। इसी तरह लुधियाना जिले में करीब छह साल पहले रिकवरी एजेंट दीपक शुक्ला की थाना डिविजन नंबर 5 की पुलिस हिरासत में हुई थी। मौत के मामले में लुधियाना की अदालत ने ऐतिहासिक फैसला सुनाया। अदालत ने मामले की गंभीरता और साक्ष्यों को देखते हुए चार पुलिसकर्मियों के खिलाफ हत्या के तहत आरोप तय करने के आदेश जारी किए हैं। यह पूरा मामला फरवरी 2020 का है, जब पुलिस ने दीपक शुक्ला को वाहन चोरी के एक मामले में हिरासत में लिया था। दीपक पर चोरी का झूठा मामला दर्ज कर उसे अमानवीय यातनाएं दीं। 26 फरवरी 2020 की रात दीपक ने दम तोड़ दिया, जिसके बाद पुलिसिया तंत्र पर गंभीर सवाल खड़े हो गए थे। दीपक के परिवार ने इंसाफ के लिए एक लंबी और थका देने वाली कानूनी लड़ाई लड़ी। पंजाब के मोगा जिले में भिंदर सिंह की मौत गैरकानूनी हिरासत में रखकर यातनाएं देने से हुई थी। न्यायिक जांच में सामने आया कि भिंदर सिंह को कथित तौर पर गैरकानूनी हिरासत में रखकर यातनाएं दी गईं। इस मामले में स्थानीय अदालत ने पंजाब पुलिस के पांच कर्मियों के खिलाफ हत्या समेत अन्य गंभीर धाराओं में ट्रायल चलाने का आदेश देते हुए केस को सेशन कोर्ट में भेज दिया है।

आम लोगों की सुरक्षा के गठित किया गया पुलिस तंत्र किस कदर तानाशाह बन गया है, अदालतों के फैसलों ने इसे बेनकाब किया है। मदुरै की एक अदालत ने सातानुकुलम पुलिस स्टेशन में बाप-बेटे की मौत के मामले में 9 लोगों को फांसी की सजा सुनाई है। इसके अलावा सभी दोषियों पर भारी जुर्माना भी लगाया गया है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

इस्लामाबाद वार्ता में प्रवाह के सिद्धांत की अनदेखी

लेफ्टिनेंट ज. एसएस मेहता सेवानिवृत्त

आधुनिक दुनिया बात तो करती है शांति की, लेकिन व्यवहार करती है व्यवधान की मशीनरी के जरिए। युद्ध अब केवल सीमाओं या खंदकों तक सीमित नहीं; आपूर्ति शृंखलाएं बाधित होती हैं, वित्तीय प्रणालियां थरथराती हैं और डिजिटल नेटवर्क एवं समुद्री मार्ग रुकते हैं। प्रतिस्पर्धा का क्षेत्र हमारे अस्तित्व के हर पहलू तक फैल चुका है, लेकिन शासकीय सिद्धांत अभी भी 17वीं सदी के 'वेस्टफेलियन संप्रभुता' के तर्क में अटके हैं। हम बाड़ लगाने के औजारों से बाढ़ नियंत्रण में लगे हैं। मूल अंतर्दृष्टि : निरंतरता के रूप में स्थिरता- इतिहास एक शांत सत्य उजागर करता है, स्थिरता निरंतर आदान-प्रदान होते रहने से बनती है, न कि प्रतिद्वंद्विता के अभाव से। मार्ग मुक्त रहें और आवाजाही सुरक्षित रहे, तो दुनिया समृद्ध होती है। जब ये प्रवाह थम जाए, तो पतन होता है। स्थिरता प्रवाह संग चलती है।

यह हमारा गंतव्य न होकर वह गति है जिसे बनाए रखना होता है- जैसे न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की शिनाख्त की थी, न कि आविष्कार। हमारे समय के व्यवधान एक अंतर्निहित नियम उजागर करते हैं : स्थिरता प्रवाह की निरंतरता के पीछे-पीछे आती है। यह तर्क कोई नया नहीं। भौतिकी इसे काफी पहले कायम कर चुकी है। प्रवाह को प्रतिरोध द्वारा संरक्षित किया व बनाया जाता है, और अंतर से प्रवाह काम करता है। एकदम बांध दें, तो दबाव कहीं और बन जाएगा। तोड़ दें, तो तबाही मच जाएगी। ग्लोबल सिस्टम का व्यवहार भी इससे अलग नहीं। इस्लामाबाद वार्ता मिसाल कायम करने का मौका गंवाया- इस्लामाबाद में बहुत बड़े दांवों वाली वार्ता में, मिसाल कायम करने का अवसर गंवा डाला। सप्ताहों तक बढ़ती गई तनातनी के बाद दोनों पक्ष मिले। अपनी-अपनी स्थिति का बचाव करते रहे, इतिहास का हवाला दिया, और रेड लाइंस खिंची। लेकिन वे खाली हाथ लौटे। जो कुछ हुआ, वह कोई वार्ता नहीं रही; यहां एक मिसाल कायम करने का मौका गंवा दिया। दोनों पक्षों को आगे बढ़ने के लिए जिस चीज की सर्वाधिक जरूरत थी, उनमें से कुछ भी सामने नहीं रखा। वार्ताकार आगे की राह टटोलने की बजाय अपनी-अपनी स्थितियां न्यायोचित ठहराने तक सीमित रहे।

वे विरोधी के रूप में मिले। चाहते तो 'प्रवाह के संरक्षक' के रूप में लौट सकते थे। लेकिन ऐसा नहीं किया। जब गौरव या जमीन के मुद्दे पर बातचीत हो, तो हम वहीं अटक जाते

हैं। जब अस्तित्व की साझा जीवन-रेखाओं पर बात करेंगे, तो आगे बढ़ेंगे। क्षैतिज गुरुत्वाकर्षण : नया स्थिरांक- अब हम किसी के सिंहासन के आकार या सीमा बहुत दूर होने से अधिक प्रभावित नहीं। नया स्थिरांक है आपसी निर्भरता; अदृश्य खिंचाव, जो ऊर्जा मार्ग, डेटा नेटवर्क और वित्तीय प्रणालियों को एकीकृत कार्यशील हकीकत में बांधता है। लंबवत ऊंचाई के लिए जैसे गुरुत्वाकर्षण काम करता है, वही काम क्षैतिज दिशा में प्रवाह का है। यह आम सहमति का इंतजार नहीं करता, न ही किसी आचार-संहिता से चालित है; यह तो बाध्यकारी है। पारस्परिक निर्भरता को हम नहीं चुनते; बल्कि इसी संग जन्म लेते हैं। आधुनिक राष्ट्र के लिए प्रवाह को नकारना ऑक्सीजन को नकारने जैसा है। प्रकृति का प्रथम नियम- प्रवाह प्रकृति का प्रथम नियम है निरंतरता से ही स्थिरता बनी रहती है; इसमें आया व्यवधान प्रणालियों को पुन: अराजकता की ओर धकेल देता है। अगले दशकों में जीवित रहने के दायित्व का तालमेल निर्भरता से बैठाना होगा। जरूरी प्रवाह रुके नहीं। खुले मार्गों से साझा नियमों तक : समुद्री कानून पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन ने यह स्वीकार किया कि गहरे समुद्र जैसे कुछ क्षेत्र खुले रहने चाहिए। इस प्रावधान ने पहुंच संरक्षित रखी; लेकिन निरंतरता सुनिश्चित नहीं की। प्रवाह का नियम इसमें अनिवार्य सुधार होना चाहिए। तब यह पहुंच को दायित्व में बदल देगा, परस्पर जुड़ी दुनिया में, मार्ग न केवल खुले, बल्कि कार्यात्मक भी रहें। अहम मार्गों का प्रवाह रोकने से फायदा नहीं होता; यह तो प्रणालीगत जोखिम है। यदि यह सिद्धांत इस्लामाबाद में हुई चर्चा में रखा होता, तो वार्ता अपनी-अपनी स्थिति का बचाव करने से हटकर मार्गों पर स्थिति की ओर मुड़ जाती व मिसाल कायम होती- समझौते के लिए नहीं, निरंतरता के लिए।

साझापन में विस्तार : साझापन की जरूरतें बदल चुकी हैं। वे अब केवल महासागर व वायुमंडल तक सीमित नहीं; उनमें अब ऊर्जा गलियारा, व्यापारिक जलमार्ग और इंटरनेट की फाइबर-ऑप्टिक शामिल हैं। ये संपत्तियां न होकर जीवित रखने योग्य जीवन-रेखाएं हैं। इन पर किसी का एकाधिकार नहीं हो; इनकी देखभाल हो। इनमें पड़े व्यवधान का असर वैश्विक स्तर पर होता है क्योंकि परस्पर निर्भरता एक योजना है, विकल्प नहीं। आवश्यकता संप्रभुता के समर्पण की नहीं बल्कि निरंतरता की रक्षा करने वाले मानदंडों का विस्तार करने की है।

जंगलों की कम होती ग्लोबल वार्मिंग से लड़ने की क्षमता

मुकुल व्यास

दुनिया के जंगल हमारे पारिस्थितिक तंत्र का आधार हैं और ग्लोबल वार्मिंग से लड़कर पर्यावरण का संतुलन बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं। लेकिन अब उनकी विशिष्ट भूमिका कमजोर हो रही है क्योंकि जंगलों में तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों की भरमार हो रही है और लंबे समय तक जीने वाली प्रजातियां तेजी से गायब हो रही हैं। स्थिर और लंबे जीवनकाल वाले पेड़ों की जगह तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों को रखना टिम्बर इंडस्ट्री और जंगल की आग के बाद जल्दी संभलने के लिए फायदेमंद है लेकिन बदलते मौसम का सामना करते समय यह जंगलों को बहुत ज्यादा खतरे में डालता है। डेनमार्क की ओरहुस यूनिवर्सिटी के वैज्ञानिकों ने 31,001 पेड़ों की प्रजातियों का वैश्विक विश्लेषण करके बताया है कि तेजी से बढ़ने वाले पेड़ किन जंगलों में हावी हो रहे हैं।

डेनिश वैज्ञानिक जेन्स-क्रिश्चियन स्वेनिंग ने नक्शों का इस्तेमाल करके दिखाया कि धीरे-धीरे बढ़ने वाले, खास किस्म के पेड़ तेजी से बढ़ने वाली प्रजातियों के आगे हार रहे हैं। स्वेनिंग ने उष्णकटिबंधीय और उपोष्णकटिबंधीय इलाकों में ऐसे कई छोटे पेड़ों का उल्लेख किया है जिनके गायब होने की संभावना सबसे ज्यादा है। एक बार जब तेजी से बढ़ने वाले पेड़ किसी जगह पर हावी हो जाते हैं, तो तूफान, सूखा और कीड़े उस जंगल के बड़े हिस्से को एक साथ गिरा सकते हैं। दरअसल, लकड़ी काटने, सड़क बनाने और आग लगने से खुली धूप वाली जगहें बन जाती हैं, जहां तेजी से बढ़ने वाले पेड़ बहुत जल्दी फैल जाते हैं। हल्की पत्तियों और मुलायम लकड़ी की वजह से ये पेड़ तेजी से बढ़ते हैं। सूखे या गर्मी की वजह से पानी की कमी होने पर भी ऐसे पेड़ों का बढ़ना जारी रहता है। इन पेड़ों में लकड़ी का घनत्व कम होता है, जिसकी वजह से इनके तने आसानी से टूट जाते हैं और जल्दी सूख जाते हैं। विषम परिस्थितियों में हल्की लकड़ी वाले पेड़ों के मरने की संभावना अधिक होती है। लंबे समय तक चलने वाले पेड़ धीरे-धीरे बढ़ते थे।

मौसम खराब होने पर उनकी गहरी जड़ें और मजबूत तने जंगल को एक साथ बनाए रखते थे। घनी लकड़ी और मजबूत पत्तियों ने उन्हें सूखे और कीड़ों से बचने में मदद की। हाल ही में आई एक रिपोर्ट ने ऐसे पेड़ों के टिकाऊपन को जलवायु सुरक्षा से जोड़ा है। इस तरह के पेड़ जंगल के पारिस्थितिकी तंत्र की रीढ़ हैं और स्थिरता और कार्बन भंडारण में योगदान देते हैं। जैसे-जैसे तूफान, कटाई और गर्मी से जंगलों पर दबाव बढ़ता है, पेड़ों की बाहरी प्रजातियां रोशनी, पानी और पोषक तत्वों के लिए मूल पौधों को घेर लेती हैं। यह दबाव दुर्लभ स्थानीय पेड़ों को खत्म होने के करीब ला सकता है। उष्णकटिबंधीय जंगलों में कई पेड़ों की प्रजातियां छोटे-छोटे इलाकों में मिलती हैं, इसलिए कुछ पेड़ों के खत्म होने से पूरा खाद्य चक्र तेजी से कम हो सकता है। जंगल कार्बन सिंक का काम करते हैं, वे जितना कार्बन छोड़ते हैं उससे कहीं ज्यादा मात्रा में उसे हटाते हैं। धीरे-धीरे बढ़ने वाले घने पेड़ों ने दशकों तक तनों में कार्बन को बंद रखा, क्योंकि ठोस लकड़ी के हर इंच में ज्यादा पदार्थ समा सकता है। तेजी से बढ़ने वाले पेड़ अक्सर कम उम्र में मर जाते हैं। उनके तने हल्के होते हैं, इसलिए उनमें जमा कार्बन तूफान और क्षय से जल्दी हवा में वापस चला जाता है। इससे जंगल लंबे समय तक कार्बन जमा करने में कम असरदार हो जाते हैं।

सही पेड़ों के बिना जंगल उन पक्षियों और स्तनपायी जीवों को खो सकते हैं जो बीज फैलाते हैं, जिससे तूफान या आग के बाद जंगल में रिकवरी धीमी हो जाती है। जंगल के प्रबंधक अक्सर जल्दी फसल के लिए तेजी से बढ़ने वाले पेड़ों को पसंद करते हैं, लेकिन जब पौधों में धीमी गति से बढ़ने वाली प्रजातियां भी शामिल होती हैं, तो जंगल लंबे समय तक अपनी मजबूती बनाए रख सकते हैं। ज्यादा पेड़ चुनने से दुर्लभ आनुवांशिकी सुरक्षित रहती है और जब मौसम का तनाव बढ़ता है, यह जंगल में पुराने विकास वाले गुणों को बनाए रखती है। एक अन्य अध्ययन में वैज्ञानिकों ने जंगलों की एक और भूमिका को उजागर किया है। अध्ययन में पाया गया कि वन की मिट्टी जलवायु परिवर्तन में जितना योगदान दे रही है, उसका हमें अंदाजा नहीं है। यह साल दर साल चुपचाप हवा से मीथेन को अवशोषित करती रहती है।

दक्षिण-पश्चिम जर्मनी में लिए गए नए दीर्घकालिक मापों से पता चलता है कि कुछ वनों में यह भूमिगत मीथेन अवशोषण क्षमता कम होने के बजाय लगातार मजबूत होती जा रही है। जर्मनी के गोटिंगेन विश्वविद्यालय के शोधकर्ताओं ने लगभग 25 वर्षों तक 13 वन भूखंडों में मीथेन के मूवमेंट का अध्ययन किया और पाया कि मिट्टी की मीथेन अवशोषण क्षमता में प्रति वर्ष लगभग 3 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। यह निरंतर वृद्धि नम और शुष्क दोनों मौसमों और धीरे-धीरे बढ़ते तापमान के दौरान देखी गई। यह वृद्धि इस धारणा को चुनौती देती है कि जलवायु परिवर्तन से मिट्टी की मीथेन अवशोषण क्षमता में एक समान कमी आएगी। नया अध्ययन इस बारे में भी नए सवाल खड़े करता है कि कुछ वन दूसरों की तुलना में तेजी से क्यों बेहतर हो रहे हैं। वनों के सूक्ष्मजीव मीथेन को अवशोषित करते हैं। कम वर्षा के कारण मिट्टी में वायु के लिए अधिक स्थान बचता है, जिससे मीथेन सतह के पास रहने के बजाय तेजी से नीचे की ओर जा सकती है। शुष्क मिट्टी में हवा से भरे छिद्र अधिक होते हैं जिससे मीथेन और ऑक्सीजन दोनों मिट्टी में आसानी से प्रवाहित हो जाते

ओट्स मिक्स

अगर आपके पास इंस्टेंट ओट्स हैं, तो उन्हें दही या दूध के साथ मिलाकर भी खाया जा सकता है। इसमें आप फल या ड्राई फ्रूट भी डाल सकते हैं।

फ्रूट चाट

फ्रूट चाट एक हेल्दी और टेस्टी स्नैक है। इसके लिए आप सेब, केला, पपीता और अनार काटकर उसमें चाट मसाला और नींबू डाल सकते हैं। बाजार में मिलने वाली पैक्ड फ्रूट चाट में चाट मसाला मिलाया जाता है, जिससे फलों के पोषक तत्व कम हो जाते हैं। अगर आपको फ्रूट चाट खानी है तो इस पर किसी भी तरह का नमक या चाट मसाला न मिलाएं।

फ्रूट कर्ड

यह भी बिना गैस सिलेंडर के आसानी से बनाया जा सकता है और हेल्दी स्नैक्स भी है। फ्रूट कर्ड बनाने के लिए सेब, केला, पपीता, अंगूर या अपनी पसंद के फलों में दही, चीनी, और चाट मसाला मिलाकर स्वादिष्ट स्नैक बना सकते हैं।

बिना गैस के भी बन सकता है टेस्टी खाना

कभी कबार घर में किसी कारणवश गैस सिलेंडर खत्म हो जाता है और कोई दूसरा उपाय नहीं होता है जिससे हम खाना बना सकें। लेकिन अगर आपके घर गैस उपलब्ध नहीं है तो भी आप कुछ ऐसे डिश हैं जिन्हें बिना गैस के भी तैयार किया जा सकता है। जिन्हें बनाने के लिए गैस या ज्यादा कुकिंग की जरूरत नहीं होती है। ये डिश न सिर्फ जल्दी बन जाती हैं बल्कि स्वादिष्ट भी होती हैं। ये आसान डिश न सिर्फ समय बचाएंगी, बल्कि इमरजेंसी में बेहद काम की साबित हो सकती हैं। इसलिए घर में हमेशा कुछ नो-कुक फूड आइटम जैसे मुरमुरे, ब्रेड, फल और अंकुरित दालें रखें। ताकि गैस न होने पर भी आसानी से खाना बनाया जा सकता है।

भेलपुरी

भेलपुरी एक लोकप्रिय स्ट्रीट फूड है जिसे घर पर आसानी से बनाया जा सकता है। इसे बनाने के लिए मुरमुरे, बारीक कटा प्याज और टमाटर, हरी चटनी और इमली की चटनी मिलाकर स्वादिष्ट भेलपुरी तैयार करें।

वेज सैंडविच

वेज सैंडविच सबसे आसान और जल्दी बनने वाली डिश है। इसे बनाने के लिए ब्रेड के स्लाइस में कटे हुए खीरा, टमाटर और प्याज रखें। नमक, चाट मसाला और सॉस डालें। कुछ ही मिनटों में टेस्टी सैंडविच तैयार हो जाएगा। अगर आपके पास सैंडविच मेकर है तब तो आप ब्रेड को टोस्ट भी कर सकते हैं। और कई तरह के सैंडविच या अन्य रेसिपी बना सकते हैं।

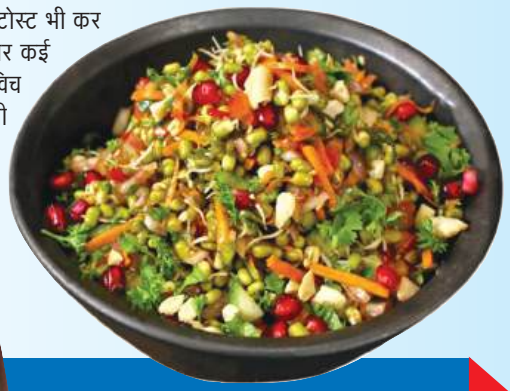

स्प्राउट सलाद

स्प्राउट सलाद सेहत के लिए भी काफी फायदेमंद होता है। इसे बनाने के लिए अंकुरित मूंग, टमाटर, प्याज, नींबू और नमक चाहिए। इन सब को मिलाकर हेल्दी सलाद तैयार किया जा सकता है। ये देर तक पेट भरा रखता है।

पीनट बटर टोस्ट

पीनट बटर टोस्ट भी एक आसान और एनर्जी से भरपूर स्नैक है। बस ब्रेड पर पीनट बटर लगाएं और चाहें तो ऊपर केले के स्लाइस भी डाल सकते हैं।

हंसना मना है

बाप-बेटा अगर ससुराल वाले स्कूटर दे तो कार मांगना, कूलर दे तो एसी मांगना, लड़का - पापा अगर वो लड़की दे तो उसकी मां को भी मांग लूं क्या?

टीचर ने गधे के सामने 1 दारु की और 1 पानी की बाल्टी रखी, गधा पानी पी गया। टीचर- तुमने इस से क्या सिखा? स्टूडेंट- जो दारु नहीं पिता वह गधा होता है!

एक आदमी मेडिकल शॉप पर जहर लेने गया। आदमी- एक जहर की बोतल देना, दुकानदार- बिना पर्ची के जहर नहीं मिल सकता। आदमी ने शादी का कार्ड दिखाया.. दुकानदार- बस कर पगले, रुलाएगा क्या? बड़ी बोतल दूं या छोटी?

एक फैमिली शोले फिल्म देख कर अपने घर आयी। तभी पति ने पत्नी से, रोमांटिक अंदाज में कहा, नाच बसंती नाच.. तभी उनका छोटा बच्चा बोला, नहीं मम्मी ईस कुत्ते के सामने मत नाचना!

भिखारी- साहब एक रुपया दे दो। साहब- तुम्हें शरम नही आती, रोड पर खड़े होकर भीख मांगते हो, भिखारी- अब तुझसे एक रूपये मांगने के लिए ऑफिस खोलूं क्या?

दो शेर जंगल में बैठे थे, पास से एक खरगोश गुजरा, आहट सुनकर एक शेर ने दूसरे से पूछा- क्या है? कुछ नहीं, फास्ट फूड है!

कहानी — बगुला भगत और केकड़ा

एक जंगल में आलसी बगुला रहता था। उसे खाना ढूंढने में भी आलस आता था। जिस कारण उसे कई दिन भूखा रहना पड़ता था। एक बार उसे एक आइडिया सूझा। वह उस योजना को सफल बनाने में जुट गया। वह नदी के किनारे एक कोने में जाकर खड़ा हो गया और मोटे-मोटे आंसू टपकाने लगा। उसे रोता देख केंकड़ा उसके पास आया और पूछा, अरे बगुला भैया, क्या बात है? रो क्यों रहे हो? बगुला रोते-रोते बोला, क्या बताऊं केंकड़े भाई, मुझे अपने किए पर बहुत पछतावा हो रहा है। अपनी भूख मिटाने के लिए मैंने आज तक न जाने कितनी मछलियों को मारा है। मैं कितना स्वार्थी था, लेकिन आज मैंने यह वचन लिया है कि अब मैं एक भी मछली का शिकार नहीं करूंगा। केंकड़े ने कहा, अरे ऐसा करने से तो तुम भूखे मर जाओगे। बगुला बोला, किसी और की जान लेकर अपना पेट भरने से तो भूखे पेट मर जाना ही अच्छा है, भाई। वैसे भी मुझे कल त्रिकालीन बाबा मिले थे और उन्होंने मुझसे कहा कि कुछ ही समय में 12 साल के लिए सूखा पड़ने वाला है, जिस कारण सब मर जाएंगे। केंकड़े ने जाकर यह बात तालाब के सभी जीवों को बता दी। अच्छा, कछुए ने चौंक कर पूछा, तो फिर इसका क्या हल है? बगुले भगत ने कहा, यहां से कुछ कोस दूर एक तालाब है। हम सभी उस तालाब में जाकर रह सकते हैं। वहां का पानी कभी नहीं सूखता। मैं सभी वहां छोड़कर आ सकता हूं। यह सुनकर जानवर खुश हो गए। अगले दिन से बगुले ने अपनी पीठ पर एक-एक जीव को ले जाना शुरू कर दिया। वह उन्हें कुछ दूर ले जाता और एक चट्टान पर ले जाकर मार डालता। उस चट्टान पर जीवों की हड्डियों का ढेर लगने लगा था। बगुला ने सोचा दुनिया भी कैसे मूर्ख है। इतनी आसानी से मेरी बातों में आ गए। एक दिन केंकड़े ने बगुले से कहा, बगुला भैया, तूम हर रोज किसी न किसी को ले जाते हो। मेरा नंबर कब आएगा? तो बगुले ने कहा, ठीक है, आज तुम्हें ले चलता हूं। जब वो दोनों उस चट्टान के पास पहुंचे, तो केंकड़े ने वहां हड्डियां देखी उसने तुरंत बगुले से पूछा कि ये हड्डियां किसकी हैं और जलाशय कितना दूर है? बगुला जोर जोर से हंसते हुए बोला, कोई जलाशय नहीं है और ये सारी तुम्हारे साथियों की हड्डियां हैं, जिन्हें मैं खा गया। उसकी यह बात सुनते ही केंकड़े ने बगुले की गर्दन पंजों से पकड़ ली। कुछ ही देर में बगुले के प्राण निकल गए। इसके बाद, केंकड़ा लौट कर नदी के पास गया और अपने बाकी साथियों को सारी बात बताई। उन सभी ने केंकड़े को धन्यवाद दिया और उसकी जय जयकार की।

7 अंतर खोजें

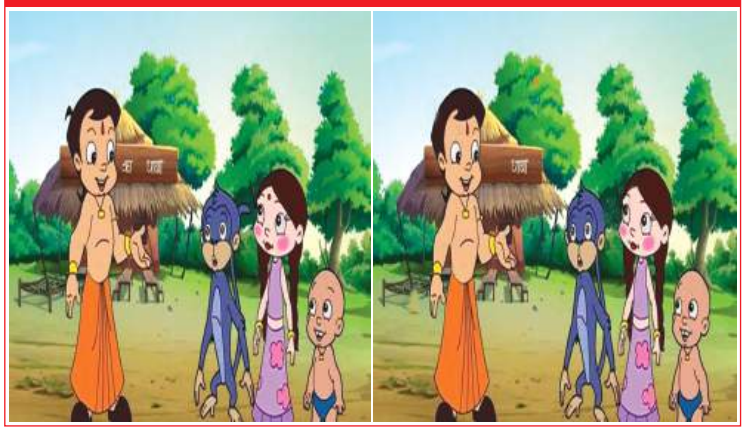

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद् हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष — नौकरी में कार्यभार रहेगा। लेन-देन में जल्दबाजी न करें। आय में निश्चितता रहेगी। जोखिम न लें। एकाएक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, लापरवाही न करें।

वृषभ — व्यापार-व्यवसाय मनोनुकूल लाभ देगा। लाभ देगा। कोई बड़ा काम करने का मन बनेगा। प्रतिद्वंद्विता में वृद्धि होगी। प्रयास सफल रहेंगे। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मिथुन — दूर से शुभ समाचार प्राप्त होंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। नए काम करने का मन बनेगा। फिजूलखर्ची ज्यादा होगी। शत्रु भय रहेगा। शारीरिक कष्ट से बाधा उत्पन्न होगी।

कर्क — व्यावसायिक यात्रा लाभदायक रहेगी। निवेश शुभ रहेगा। नौकरी में अधिकार बढ़ने के योग हैं। कोई बड़ी समस्या का अंत हो सकता है। जोखिम व जमानत के कार्य टालें।

सिंह — स्वयं के काम पर ध्यान दें। बनते काम बिगड़ सकते हैं। विवाद को बढ़ावा न दें। चिंता तथा तनाव रहेंगे। व्यापार ठीक चलेगा। कार्यकुशलता कम होगी।

कन्या — व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। बकाया वसूली के प्रयास सफल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। कोई बड़ा काम करने का मन बनेगा। भाग्य का साथ मिलेगा।

तुला — सुख के साधन जुटेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे। नई योजना बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। व्यवसाय लाभदायक रहेगा।

वृश्चिक — तंत्र-मंत्र में रुचि जागृत होगी। किसी जानकार व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त हो सकता है। कोर्ट व कचहरी के कार्य मनोनुकूल रहेंगे। लाभ के अवसर हाथ आएंगे।

धनु — भागदौड़ होगी। व्यवसाय ठीक चलेगा। आय बनी रहेगी। लाभ के लिए प्रयास करें। स्वास्थ्य का पाया कमजोर रहेगा। पार्टनरों से कहासुनी हो सकती है।

मकर — व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी। प्रेम-प्रसंग में अनुकूलता रहेगी। कोई ऐसा कार्य न करें जिससे कि अपमान हो। व्यापार-व्यवसाय अनुकूल रहेगा।

कुम्भ — भूमि व भवन संबंधी योजना बनेगी। बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं। उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य संबंधी चिंता बनी रहेगी। आशंका व कुशंका रहेगी।

मीन — यात्रा मनोरंजक रहेगी। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा। विद्यार्थी वर्ग सफलता प्राप्त करेगा। किसी प्रबुद्ध व्यक्ति का मार्गदर्शन प्राप्त होगा। अज्ञात भय रहेगा।

शानदार रही भूत बंगला की शुरुआत, आते ही कई फिल्मों को रौंदा, बना दिए दो बड़े रिकॉर्ड

अक्षय कुमार की हॉरर कॉमेडी फिल्म भूत बंगला कई कारणों से इस साल की मच अवेटेड फिल्मों में से एक रही है। सबसे पहले तो, यह अक्षय की इस साल की पहली फिल्म है और साथ ही इससे एक्टर ने पांच साल बाद हॉरर कॉमेडी जॉनर में वापसी की है। दिलचस्प बात यह है कि भूत बंगला अक्षय और प्रियदर्शन की हिट जोड़ी की

14 साल बाद की रीयूनियन फिल्म है।

इतनी सारी वजहों ने भूत बंगला का बज सातवें आसमान पर पहुंचाया हुआ था। इसी के साथ रिलीज के पहले दिन भूत बंगला को दर्शकों से अच्छा रिस्पॉन्स मिला है। चलिए यहां जानते हैं अक्षय कुमार स्टारर ने कितने करोड़ से ओपनिंग की है?

अक्षय कुमार और प्रियदर्शन की जोड़ी की हॉरर-कॉमेडी फिल्म भूत बंगला फाइनली शुक्रवार को सिनेमाघरों में पहुंच गई। ये फिल्म ऐसे समय में रिलीज हुई है जब 'धुरंधर 2' पिछले एक महीने से बॉक्स ऑफिस पर गदर मचा रही है। बता दें कि 'धुरंधर 2' की स्ट्रैटजी पर चलते हुए भूत बंगला ने भी रिलीज से एक दिन पहले पेड प्रीव्यू शो रखे थे जिसमें इस फिल्म ने अच्छा परफॉर्म किया। वहीं शुक्रवार को वर्ल्डवाइड रिलीज होने के बाद भूत बंगला ने दर्शकों पर जादू कर दिया जिसते चलते इस फिल्म ने अच्छी ओपनिंग की है। वहीं भूत बंगला के कलेक्शन की बात करें तो सैकनिल्क के आंकड़ों के मुताबिक अक्षय कुमार स्टारर फिल्म ने पेड प्रीव्यू शो में 3.40 करोड़ की नेट कमाई की थी।

इसी के साथ पेड प्रीव्यू और पहले दिन की कमाई मिलाकर भूत बंगला का भारत में कलेक्शन 15.75 करोड़ रुपये हो गया है।

अक्षय कुमार की फैंटेसी कॉमेडी फिल्म भूत बंगला ओपनिंग डे पर रणवीर सिंह की धुरंधर 2 या सनी देओल की बॉर्डर 2 को टक्कर नहीं दे पाई हालांकि, इसने शाहिद कपूर की ओ रोमियो और 2026 में रिलीज हुई अन्य फिल्मों को आसानी से पीछे छोड़ते हुए बॉलीवुड में 2026 की तीसरी सबसे बड़ी ओपनिंग का रिकॉर्ड अपने नाम कर लिया है।

अवनीत कौर ने दुल्हनिया बन चुराया फैंस का दिल

अवनीत कौर ने हाल ही में दुल्हनिया लुक में अपनी खूबसूरत तस्वीरें शेयर की हैं। पेस्टल लहंगे में उनका ग्रेसफुल अंदाज़ फैंस को खूब पसंद आ रहा है। उनकी ये फोटोज सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रही हैं। अवनीत कौर ने इंस्टाग्राम पर अपनी कुछ लेटेस्ट फोटोज शेयर कर फैंस का दिल चुरा लिया है। शेयर की गई तस्वीरों में अवनीत कौर पेस्टल कलर के लहंगे में नजर आ रही हैं। लहंगे के साथ उन्होंने स्टाइलिश ब्लाउज कैरी किया और मैचिंग दुपट्टा पेयर किया।

उन्होंने सिल्वर एक्सेसरीज कैरी करके अपने इस ब्राइडल लुक को कंप्लीट किया है। उन्होंने हैवी कलीरे और पिंक चूड़ा भी पहना।

उन्होंने स्लीक हेयरस्टाइल बनाया और अपने मेकअप को काफी मिनिमल रखा।

अवनीत कौर ने ब्राइडल लुक में जमकर अलग अलग अंदाज में पोज दिए हैं। फैंस उनका ये लुक देख दीवाने हो गए हैं। उनकी ये तस्वीरें सोशल मीडिया पर काफी वायरल हो रही हैं। हमेशा की तरफ फैंस इन फोटोज को भी खूब पसंद कर रहे है। बता दें अवनीत कौर को इंस्टाग्राम पर 31 मिलियन ने ज्यादा लोग फॉलो करते हैं। फैंस उनकी हर एक नई पोस्ट का बेसब्री से इंतजार करते हैं।

बॉलीवुड | **मन की बात**

रामायण में रावण के लिए हैवी कॉस्ट्यूम में शूट करना आसान नहीं था : यश

रामायण इन दिनों इंटरनेट पर खूब चर्चा में है। इस फिल्म में कई कलाकार एक साथ नजर आने वाले है। साउथ सुपरस्टार यश फिल्म में रावण का किरदार निभा रहे हैं। यश अपनी अपकमिंग फिल्म रामायण को लेकर खुलकर बातें कर रहे हैं। वहीं हाल ही में एक्टर ने अपने किरदार के बारे में कई जानकारियां शेयर की। दरअसल, हाल ही में एक्टर सिनेमाकॉन फेस्टिवल में पहुंचे। इस दौरान उन्होंने मीडिया संगर बातचीत करते हुए अपने किरदार रावण को लेकर कई दिलचस्प खुलासे किए। उन्होंने बताया कि इस आइकॉनिक विलेन को पर्दे पर उतारना आसान नहीं था और इसके लिए उन्हें शारीरिक के साथ-साथ क्रिएटिव लेवल पर भी काफी मेहनत करनी पड़ी। यश ने अपने किरदार रावण के कॉस्ट्यूम को लेकर खुलकर बात की। उन्होंने बताया कि ब्लैक-गोल्ड आउटफिट, भारी मुकुट और आर्मर पहनना उन्हें 'पावरफुल' तो महसूस कराता था, लेकिन यह काफी भारी और थकाने वाला भी था। यश ने कहा कि इतने हैवी कॉस्ट्यूम में शूट करना आसान नहीं था और बीच-बीच में उसे उतारना पड़ता था। यश ने रावण के दस सिर को दिखाने के तरीके को लेकर दिलचस्प बात कही है। उन्होंने बताया कि फिल्म में इसे एक अलग और खास अंदाज़ में पेश किया जाएगा। यश के मुताबिक, रावण हर काम में माहिर था और उसी को उसके दस सिर के रूप में दिखाया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह सीन काफी खास और दिलचस्प होने वाला है, जिसे देखने में दर्शकों को मजा आएगा। फिल्म रामायण की रिलीज़ को लेकर भी अपडेट सामने आया है। खबर है कि रावण का पूरा लुक अभी छुपाकर रखा गया है और जल्द ही इसे रिवील किया जा सकता है। वहीं, इस फिल्म का पहला पार्ट दिवाली 2026 के आसपास रिलीज़ करने की तैयारी है, हालांकि मेकर्स अक्टूबर के अंत में ही इसे रिलीज़ करने का प्लान बना रहे हैं।

इंसानों से भी ज्यादा अक्लमंद होती हैं चींटियां पर्यावरण संतुलन में निभाती हैं अहम भूमिका

हम अक्सर घर या बगीचे में दिखाई देने वाली चींटियों को परेशानी समझकर तुरंत हटाने की कोशिश करते हैं। लेकिन असल में ये छोटी-सी काली चींटियां प्रकृति की बेहद मेहनती प्रजातियों में से एक हैं। ये सिर्फ रसोई तक सीमित नहीं रहतीं, बल्कि पूरे पर्यावरण के संतुलन में अहम भूमिका निभाती हैं। तो आइए, इनके इस अनदेखे संसार को थोड़ा करीब से समझते हैं। ज्यादातर लोग इन्हें सिर्फ झुंझलाहट का कारण मानते हैं, जबकि हकीकत में ये पौधों की सुरक्षा करने वाली नेचुरल गार्ड होती हैं। फूलों से रस इकट्ठा करने के दौरान ये पौधों पर मौजूद हानिकारक कीड़ों को खत्म कर देती हैं। इतना ही नहीं, कई जंगली पौधे अपने बीज फैलाने के लिए इन पर निर्भर रहते हैं, जिससे प्रकृति का चक्र चलता रहता है। चींटियां जमीन के भीतर सुरंगें बनाकर मिट्टी को ढीला और हवादार बनाती हैं, जिससे पौधों की जड़ों को बेहतर ऑक्सीजन मिलती है और उनका विकास मजबूत होता है। साथ ही, ये मृत कीड़ों और जैविक कचरे को खाकर उसे पोषक तत्वों से भरपूर खाद में बदल देती हैं, जो मिट्टी की उर्वरता बढ़ाने में मददगार है। हालांकि, इनके कुछ नकारात्मक पहलू भी हैं। जैसे, ये 'एफिड्स' नाम के कीड़ों की रक्षा करती हैं ताकि उनसे मीठा रस मिल सके, लेकिन यही एफिड्स पौधों को नुकसान पहुंचाते हैं। वहीं, कुछ प्रजातियां जैसे कारपेंटर चींटियां लकड़ी को नुकसान पहुंचा सकती हैं और कुछ के काटने से दर्द भी हो सकता है। अगर घर में चींटियों की संख्या बढ़ जाए, तो केमिकल के बजाय घरेलू उपाय ज्यादा सुरक्षित रहते हैं। सफेद सिरका और पानी का बराबर मात्रा में घोल उनके रास्तों को मिटा देता है। पुदीना तेल, दालचीनी या काली मिर्च का इस्तेमाल भी उन्हें दूर रखने में मदद करता है। साथ ही, खाने-पीने की चीजों को बंद डिब्बों में रखना और सफाई का ध्यान रखना सबसे कारगर उपाय है। दरअसल, चींटियां हमारे इकोसिस्टम का एक जरूरी हिस्सा हैं। ये फूड चेन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और कई जीवों का भोजन भी बनती हैं। इसलिए इन्हें पूरी तरह खत्म करने के बजाय समझदारी से संतुलन बनाए रखना ज्यादा जरूरी है। ताकि ये प्रकृति में अपना काम करती रहें और हमारे घरों में परेशानी न बनें।

अजब-गजब | **सबसे साफ नदियों में होती है इस नदी की गिनती**

इस नदी में झांकते ही दिख जाता है नीचे का सारा पत्थर

भारत में नदियों को केवल पानी का स्रोत नहीं माना जाता, बल्कि उन्हें मां के रूप में सम्मान और श्रद्धा दी जाती है। सदियों से ये नदियां हमारी संस्कृति, आस्था और जीवन का अहम हिस्सा रही हैं। लेकिन आज के समय में बढ़ते प्रदूषण ने कई नदियों की हालत खराब कर दी है। ऐसे में अगर कोई कहे कि भारत में एक ऐसी नदी भी है, जिसका पानी कांच की तरह साफ है और जिसमें नीचे का एक -एक पत्थर साफ-साफ दिखाई देता है, तो सुनकर हैरानी जरूर होगी। यही नहीं, इस नदी में चलती नावें कई बार ऐसी नजर आती हैं, जैसे वो पानी में ना चलकर हवा में उड़ रही हैं। यह नजारा किसी जादू से कम नहीं लगता।

दरअसल, हम बात कर रहे हैं उमंगोट नदी की, जिसे दावकी नदी के नाम से भी जाना जाता है। यह नदी भारत की सबसे साफ नदियों में गिनी जाती है। यह खूबसूरत नदी मेघालय के पश्चिम जयंतिया हिल्स जिले में स्थित दावकी कस्बे के पास बहती है। मेघालय अपनी प्राकृतिक खूबसूरती के लिए पूरी दुनिया में जाना जाता है, और उमंगोट नदी उसकी सबसे खास पहचान बन चुकी है। चारों ओर हरे-भरे पहाड़ और बीच में बहती यह साफ नदी किसी सुंदर तस्वीर जैसी लगती है।

इस नदी की सबसे बड़ी खासियत इसका बिल्कुल साफ, क्रिस्टल जैसा पानी है। इसमें नीचे की छोटी से छोटी चीज भी साफ दिखाई देती है, चाहे वह पत्थर हों या रेत। इसके साफ रहने की कई वजहें हैं। सबसे बड़ी वजह यह है कि यह नदी कम आबादी वाले इलाकों से होकर गुजरती है, जिससे इसमें गंदगी बहुत कम पहुंचती है। साथ ही, इस नदी के पानी में ऑक्सीजन का स्तर भी अन्य नदियों की तुलना में ज्यादा होता है, जो इसे साफ और जीवंत बनाए रखता है। इसके अलावा, जहां से यह नदी बहती है वहां शहरीकरण और औद्योगिक गतिविधियां बहुत कम हैं। इसी कारण इसमें हानिकारक केमिकल और प्रदूषक नहीं पहुंच पाते और यह आज भी अपनी प्राकृतिक शुद्धता बनाए हुए है।

उमंगोट नदी खासी और जयंतिया पहाड़ियों के बीच से होकर गुजरती है। यह नदी भारत-बांग्लादेश सीमा के साथ बहते हुए आगे बांग्लादेश में प्रवेश करती है। वहां जाकर यह पियाइन नदी में मिलती है, जो आगे चलकर सुरमा नदी की सहायक बनती है। यानी यह नदी ना सिर्फ भारत, बल्कि पड़ोसी देश के जल स्रोतों से भी जुड़ी हुई है। आपको बता दे कि दावकी क्षेत्र के लोगों की जिंदगी काफी हद तक इस नदी पर ही निर्भर है। यहां के लोग मछली पकड़ने, नाव चलाने और पर्यटन के जरिए अपनी रोजी-रोटी कमाते हैं। हर साल मार्च और अप्रैल के महीने में यहां पारंपरिक नाव दौड़ का आयोजन भी किया जाता है, जिसे देखने के लिए दूर-दूर से पर्यटक आते हैं। इस आयोजन के वजह से इस जगह की सांस्कृतिक पहचान को और खास बनाता है।

दावकी सस्पेंशन ब्रिज इस इलाके की एक और खास पहचान है। इसका निर्माण 1932 में ब्रिटिश काल के दौरान किया गया था और आज भी इसका इस्तेमाल किया जाता है। यह पुल भारत और बांग्लादेश के बीच व्यापार के लिए एक महत्वपूर्ण मार्ग का हिस्सा भी है। नदी के ऊपर बना यह पुल और नीचे बहता साफ पानी, दोनों मिलकर एक शानदार दृश्य बनाते हैं। उमंगोट नदी सिर्फ एक खूबसूरत और देश की सबसे साफ नदी ही नहीं बल्कि यह पर्यावरण संरक्षण की एक बेहतरीन मिसाल भी है। जहां देश की कई नदियां प्रदूषण से जूझ रही हैं, वहीं यह नदी हमें सिखाती है कि अगर प्रकृति का सही तरीके से ध्यान रखा जाए, तो उसकी सुंदरता हमेशा बनी रह सकती है।

देश का चुनावी नक्शा बदलने की कोशिश कर रही भाजपा : राहुल

» पीएम को जादूगर बताने पर भड़की बीजेपी, माफी मांगने की रखी मांग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। लोकसभा में विपक्ष के नेता राहुल गांधी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को जादूगर कहकर सदन में हंगामा खड़ा कर दिया, जिसके बाद भाजपा ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। महिला आरक्षण विधेयक पर बहस को संबोधित करते हुए गांधी ने भाजपा पर देश का चुनावी नक्शा बदलने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि भाजपा देश की राजनीति में जो हो रहा है उससे डरे हुए हैं, अपनी ताकत के कम होने से डरे हुए हैं, और इसलिए भारत का राजनीतिक नक्शा बदलने की कोशिश कर रहे हैं। आपने असम और जम्मू-कश्मीर में ऐसा किया, और अब सोच रहे हैं कि आप पूरे भारत में ऐसा कर सकते हैं।

इसके लिए आपको संविधान में संशोधन की जरूरत है। गांधी ने कहा कि भाजपा जानती थी कि विधेयक सदन में पारित नहीं होगा और इसलिए घबरा रही है। उन्होंने आगे कहा कि सच तो यह है कि जादूगर पकड़ा गया है। बालाकोट का जादूगर, नोटबंदी का जादूगर, सिंदूर का जादूगर अचानक पकड़ा गया है। उन्होंने आगे कहा कि सब जानते हैं कि हमारे दोस्त, जादूगर और व्यवसायी के बीच साझेदारी है। राहुल गांधी की टिप्पणियों पर भाजपा सांसदों ने तीखी प्रतिक्रिया व्यक्त की। केंद्रीय संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजिजू ने कहा कि गांधी प्रधानमंत्री के लिए गलत भाषा का प्रयोग कर रहे हैं और बालाकोट हमलों और ऑपरेशन सिंदूर का हवाला देकर देश और सेना को बदनाम कर रहे हैं।

मेरे और पीएम के बीच पत्नी वाला मसला नहीं

लोकसभा में विपक्ष के नेता ने शुक्रवार को संसद के चल रहे विशेष सत्र के दौरान चल रही तीखी बहस के बीच हल्के-फुल्के अंदाज में बात की। यह सत्र तीन विधेयकों पर विचार-विमर्श और मतदान के लिए बुलाया गया है, जिनका उद्देश्य 29 में विधानसभाओं में महिलाओं के लिए आरक्षण को जल्द से जल्द लागू करना सुनिश्चित करना है। लोकसभा में बोलते हुए, कांग्रेस सांसद ने स्वीकार किया कि लगभग हर किसी के जीवन में एक महिला का महत्वपूर्ण प्रभाव रहा है, चाहे वह मां, बहन या पत्नी के रूप में हो।

राजनाथ ने मोर्चा संभाला

रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने लोकसभा अध्यक्ष ओम बिरला से राहुल गांधी की टिप्पणियों को रिकॉर्ड से हटाने का अनुरोध किया। उन्होंने कहा कि विपक्ष के नेता द्वारा देश के प्रधानमंत्री के बारे में इस्तेमाल किए गए शब्द बेहद दुर्भाग्यपूर्ण हैं। मेरा मानना है कि इसकी निंदा करना काफी नहीं है। सिंह ने कहा कि उन्हें बार-बार 'जादूगर' कहना वास्तव में देश की जनता का अपमान है। इसके लिए राहुल गांधी को माफी मांगनी चाहिए।

हम सभी अपने जीवन में महिलाओं से बहुत प्रभावित हुए हैं: नेता प्रतिपक्ष

राहुल ने कहा कि महिलाएं एक केंद्रीय शक्ति होती हैं, जो हमारी राष्ट्रीय स्तर की कल्पना और हमारे राष्ट्रीय परिदृश्य में एक प्रेरक शक्ति हैं। हम सभी अपने जीवन में महिलाओं, माताओं, बहनों और पत्नियों से बहुत प्रभावित हुए हैं, उनसे बहुत कुछ सीखा है। उन्होंने कहा कि रीजीजू ने कहा है, लेकिन न तो मेरे पास और न ही प्रधानमंत्री के पास पत्नी वाला मसला है, इसलिए हमें उस नजरिए से प्रतिक्रिया नहीं मिलती है। लेकिन हमारी मां और बहन हैं।

भाजपा उम्मीदवारों के पर्चे बांट रहे सीआरपीएफ जवान : डेरेक ओब्रयन

» बंगाल में वोटिंग से पहले टीएमसी ने सीईसी ज्ञानेश कुमार को लिखी चिट्ठी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। तृणमूल कांग्रेस नेता डेरेक ओ'ब्रायन ने पश्चिम बंगाल विधानसभा चुनाव के बीच के मुख्य निर्वाचन अधिकारी को पत्र लिखा है। इस पत्र में उन्होंने केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल पर गंभीर आरोप लगाए हैं। उन्होंने चुनाव आयोग द्वारा जारी फोर्स डिप्लॉयमेंट इन इलेक्शंस मैनुअल, 23, जनप्रतिनिधित्व अधिनियम, 1951 और भारतीय न्याय संहिता, 23 का उल्लंघन किया गया है। पत्र में फेसबुक पर प्रसारित एक वीडियो के आधार पर यह शिकायत की गई है।

इस वीडियो में कुछ नागरिक यह दावा करते हुए दिखाई दे रहे हैं कि सीआरपीएफ के जवान कथित तौर पर भाजपा उम्मीदवारों के साथ घूम रहे थे, भाजपा के पर्चे बांट रहे थे और मतदाताओं को भाजपा के पक्ष में वोट देने के लिए प्रेरित कर रहे थे।पत्र में कहा गया है कि यह व्यवहार कथित तौर पर आपराधिक धमकी और चुनावी प्रक्रिया में अनुचित प्रभाव (धारा 174) के तहत अपराध है. इसमें यह भी आरोप लगाया गया है कि इस तरह की गतिविधियां मतदाताओं में डर का माहौल पैदा करती हैं और स्वतंत्र मतदान के अधिकार को प्रभावित करती हैं। टीएमसी ने यह भी कहा है कि सीआरपीएफ जैसे केंद्रीय बलों का चुनाव ड्यूटी के दौरान निष्पक्ष रहना अनिवार्य है और इस तरह का व्यवहार चुनाव आयोग के दिशानिर्देशों का उल्लंघन है.पत्र में जनप्रतिनिधित्व अधिनियम की धारा 123 और 129 का हवाला देते हुए कहा गया है कि किसी भी पुलिस बल के सदस्य को मतदाताओं को प्रभावित करने या किसी भी पार्टी के पक्ष में वोट डालने के लिए प्रेरित करने की अनुमति नहीं है। टीएमसी ने मुख्य निर्वाचन अधिकारी से मांग की है कि संबंधित सीआरपीएफ कर्मियों को कारण बताओ नोटिस जारी किया जाए. उनके खिलाफ एफआईआर दर्ज करने के निर्देश दिए जाएं. सभी केंद्रीय बलों को बंगाल में निष्पक्षता और आयोग के नियमों का सख्ती से पालन करने के निर्देश दिए जाएं ।

जीत की हैट्रिक लगाना चाहेगी चेन्नई

» सनराइजर्स हैदराबाद से मुकाबला आज

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

हैदराबाद। आईपीएल के 19वें सीजन के सत्ताइसवें मुकाबले में सनराइजर्स हैदराबाद और पांच बार की चैंपियन चेन्नई सुपर किंग्स के बीच भिड़ंत होने जा रही है। ये मुकाबला हैदराबाद के राजीव गांधी अंतरराष्ट्रीय स्टेडियम में खेला जाएगा। चेन्नई सुपर किंग्स की टीम खराब शुरुआत के बाद जीत की पटरी पर लौट आई है। संजू सैमसन के फार्म के लौटते ही चेन्नई दो मैच में जीत दर्ज कर चुकी है। हालांकि अबतक सीजन में खेले पांच मैच में दो जीत और तीन हार के साथ आठवें पायदान पर है। वहीं दूसरी तरफ मेजबान हैदराबाद की टीम 5 मैच में 2 जीत और तीन हार के साथ अंक तालिका में चौथे स्थान पर है।

ऐसे में आज के मुकाबले में चेन्नई की नजर जीत की हैट्रिक पूरी करने के साथ-साथ नेट रन रेट में सुधार की होगा। नहीं तो आगे चलकर यह टीम के लिए परेशानी का सबब बन सकता है। हैदराबाद की टीम भी अबतक अपनी लय हासिल नहीं कर सकी है। अपने आखिरी मुकाबले में हैदराबाद ने राजस्थान रॉयल्स का विजय रथ रोका था। एक बार फिर वो यही कारनामा सीएसके के खिलाफ करना चाहेगी।(सनराइजर्स हैदराबाद और चेन्नई सुपर किंग्स के बीच आईपीएल के इतिहास में अबतक कुल 22 मैच खेले गए हैं। इनमें से हैदराबाद को 7 और सीएसके को 15 मैच में जीत हासिल हुई है। दोनों टीमों के बीच खेले गए पिछले पांच मैच में से तीन मैच में सीएसके को जीत मिली है और दो मैच हैदराबाद के नाम रहे हैं। हैदराबाद के मैदान पर दोनों के बीच पांच ही मैच खेले गए हैं जिसमें से हैदराबाद को तीन और चेन्नई को दो मैच में जीत मिली। ऐसे में इस मैदान पर हैदराबाद और चेन्नई के बीच कांटे की टक्कर देखने को मिलेगी।

सत्र की पहली जीत को तरसी केकेआर, गुजरात से भी हारी मैच

अहमदाबाद। गुजरात टाइटंस ने केकेआर को पांच विकेट से हरा दिया। नरेंद्र मोदी स्टेडियम में खेले गए मुकाबले में टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने उतरी केकेआर ने कैमरन ग्रीन की अर्धशतकीय पारी की मदद से 20 ओवर में 10 विकेट पर 180 रन बनाए। जवाब में गुजरात ने 19.4 ओवर में पांच विकेट पर 181 रन बनाए और मुकाबला अपने नाम कर लिया। यह केकेआर की इस सीजन में पांचवीं हार है। टॉस जीतने के बाद पहले बल्लेबाजी करने उतरी केकेआर की शुरुआत अच्छी नहीं रही। फिर 32 के स्कोर पर तीन विकेट गंवाकर मुश्किल में दिख रही केकेआर की पारी को रोवमैन पॉवेल और कैमरून ग्रीन ने संभाला। दोनों ने चौथे विकेट के लिए 55 रन जोड़े। लक्ष्य का पीछा करने उतरी गुजरात के लिए साई सुदर्शन और कप्तान शुभमन गिल ने मिलकर 57 रन जोड़े। इसके बाद जोस बटलर और गिल ने दूसरे विकेट के लिए 38 रन जोड़े। हालांकि, कप्तान शुभमन गिल ने एक छोर से अपनी शानदार बल्लेबाजी जारी रखी और अपना अर्धशतक पूरा किया।

राहुल पर एफआईआर दर्ज करने का आदेश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

» इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने दोहरी नागरिकता के आरोपों के मामले में दिया फैसला

लखनऊ। इलाहाबाद उच्च न्यायालय ने कहा कि कांग्रेस नेता के पास दोहरी नागरिकता होने के आरोपों की जांच आवश्यक है। न्यायालय ने लोकसभा में विपक्ष के नेता के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने का आदेश देते हुए यह भी कहा कि उच्च न्यायालय ने उत्तर प्रदेश सरकार को निर्देश दिया कि वह या तो स्वयं जांच करे या मामले को जांच के लिए किसी केंद्रीय एजेंसी को सौंप दे। यह टिप्पणी भाजपा कार्यकर्ता एस. विग्नेश शिशिर द्वारा दायर याचिका की सुनवाई के दौरान आई, जिसमें उन्होंने लखनऊ की विशेष सांसद/विधायक अदालत द्वारा 28 जनवरी को पारित आदेश को चुनौती दी थी।

निचली अदालत ने कांग्रेस नेता के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने की उनकी याचिका खारिज कर दी थी। इससे पहले, उत्तर प्रदेश के सुलतानपुर जिले की एक विशेष अदालत ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी के खिलाफ जारी एक मानहानि मामले की शुक्रवार को सुनवाई के दौरान वादी पक्ष के रवैये पर सख्त रुख अपनाते हुए उन्हें भविष्य में किसी भी तरह की ढिलाई न बरतने की हिदायत दी। राहुल के अधिवक्ता काशी प्रसाद शुक्ला ने बताया कि अदालत में दंड प्रक्रिया संहिता की धारा 311 के तहत एक प्रार्थना पत्र पर बहस होनी थी लेकिन वादी पक्ष के वकील ने एक बार फिर स्थगन की मांग की, जिसे अदालत ने स्वीकार करते हुए एक महत्वपूर्ण आदेश जारी किया। वादी पक्ष पिछले कई तारीखों से लगातार स्थगन की मांग कर रहा है, जिससे मामले की कार्यवाही आगे नहीं बढ़ पा रही है और इसे गंभीरता से लेते हुए अदालत ने स्पष्ट किया कि अगर अगली तिथि पर वादी पक्ष बहस के लिए उपस्थित नहीं होता तो उनके विरुद्ध उत्पीड़नात्मक कार्रवाई की जा सकती है।

प्रमाण पत्र के नाम पर खुली लूट!

» 25 रुपये के काम के लिए 25 हजार तक वसूली

» जिम्मेदार अधिकारी से लेकर नगर आयुक्त तक खामोश

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ । लखनऊ नगर निगम जोन-1 में जन्म और मृत्यु प्रमाण पत्र बनवाने के नाम पर खुलेआम लूट का खेल चल रहा है। आरोप है कि जिस काम की सरकारी फीस महज 25 रुपये के बीच निर्धारित है, उसी काम के लिए आम जनता से हजारों रुपये वसूले जा रहे हैं। हैरानी की बात यह है कि इस पूरे मामले में जिम्मेदार अधिकारियों से लेकर नगर आयुक्त तक की ओर से कोई ठोस कार्रवाई नजर नहीं आ रही है, जिससे बाबू और बाहरी लोगों की मिलीभगत जनता को लूटा जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार, जोन-1 में पुराने जन्म या मृत्यु प्रमाण पत्र को कैंसिल कराने के लिए लोगों से 15 हजार से लेकर 25 हजार रुपये तक की मांग की जा रही है। वहीं नया जन्म प्रमाण पत्र बनवाने के लिए भी लोगों को तहसील का हवाला देकर 2 हजार से 3 हजार रुपये तक वसूले जा रहे हैं। वेरिफिकेशन के नाम पर भी मनमानी रकम तय कर दी जाती है और बिना पैसे दिए फाइल आगे नहीं बढ़ती। बताया जा रहा है कि इस पूरे खेल में कुछ जिम्मेदार बाबुओं के साथ-साथ बाहरी और प्राइवेट लोग भी सक्रिय हैं। नगर निगम कार्यालय में ऐसे बिचौलिए खुलेआम घूमते नजर आते हैं जो खुद को काम कराने वाला बताकर जनता से मोटी रकम वसूल लेते हैं।

बाबू और लोगों की मिलीभगत से हो रही अवैध वसूली

बाबू और प्राइवेट लोगों की मिलीभगत से सर्टिफिकेट बनवाने से लेकर वेरिफिकेशन तक हर स्तर पर अवैध वसूली की जा रही है। नगर निगम जैसे सरकारी कार्यालय में जहां जनता अपने जरूरी दस्तावेज बनवाने के लिए आती है, वहीं उन्हें मजबूरी में बिचौलियों के चक्कर लगाने पड़ रहे हैं। कई लोगों का आरोप है कि बिना पैसे दिए उनका काम महीनों तक लटका दिया जाता है, जिससे परेशान होकर उन्हें मोटी रकम देनी पड़ती है। नगर आयुक्त को इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच कराने और दोषी कर्मचारियों व बिचौलियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करनी चाहिए।

महिला आरक्षण संशोधन विधेयक के गिरते ही एनडीए व मोदी सरकार पर चौतरफा प्रहार

» विपक्ष बोला- पीएम मोदी का पतन जल्द ही होने वाला है

» राहुल गांधी ने देश के लोकतंत्र को बचाया

» कांग्रेस, सपा, शिवसेना यूबीटी ने भाजपा पर साधा निशाना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। देश की संसद में महिला आरक्षण संशोधन विधेयक दो तिहाई बहुमत न होने की वजह से पास नहीं हो पाया। इस बीच राहुल गांधी को लेकर प्रतिक्रियाओं का दौर शुरू हो गया है। विपक्ष ने एडीए सरकार को घेरना शुरू कर दिया है। कांग्रेस, शिवसेना यूबिटी से लेकर सपा तक ने मोदी सरकार पर चौतरफार वार शुरू कर दिया है।

राहुल गांधी के इस बयान पर शिवसेना यूबीटी सांसद संजय राउत ने प्रतिक्रिया दी है। उन्होंने कहा कि राहुल गांधी ने कल देश के लोकतंत्र बचाने के आंदोलन का नेतृत्व किया है। राहुल गांधी देश के बहुत प्रभावशाली नेता हैं। राहुल गांधी के नेतृत्व में हम लोगों ने कल एक बहुत बड़ी जंग को जीत में बदल दिया है।

यह एक राजनीतिक साजिश थी : संजय राउत

सोशल मीडिया पोस्ट में उन्होंने लिखा कि महिला आरक्षण विधेयक एक राजनीतिक साजिश थी, और यह विफल हो गई। यह मोदी और उनके गुट के पतन की शुरुआत है। वे महिला आरक्षण की आड़ में मनमाने ढंग से मतदाताओं के गठबंधन में हेरफेर करके सभी चुनाव जीतना चाहते थे। संसद में उनकी ये योजनाएं धराशायी हो गईं, वे लोकसभा सीटों की संख्या मनमाने ढंग से नहीं बढ़ा सके, लेकिन उन्हें संविधान की शक्ति और अपनी वास्तविक ताकत का एहसास हो गया है। उन्होंने आगे लिखा कि प्रधानमंत्री का पद केवल 16 सांसदों के बहुमत पर टिका है, अगर ये 16 भी कम हो गए, तो उन्हें अपना बोरिया-बिस्तर बांधकर बाहर जाना पड़ेगा। आज के घटनाक्रम का यही अर्थ है। मोदी का पतन जल्द ही होने वाला है, मेरी बात याद रखना राहुल गांधी ने उन 16 सांसदों के गले में फंदा डाल दिया है। संजय राउत ने बिल पेश होने से पहले कहा था कि महिला आरक्षण के आड़ में जो परिसीमन का खेल चल रहा है, वह बहुत गंभीर है, बीजेपी अपने अनुसार पॉलिटिकल मैप बनाने की कोशिश कर रही है।

परिसीमन की वजह से किया संविधान (131वां संशोधन) विधेयक का विरोध : खरगे

राज्यसभा में विपक्ष के नेता और कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे ने शनिवार को इस बात पर जोर देते हुए कहा कि इंडिया ब्लॉक के सांसद महिला विरोधी नहीं हैं। उन्होंने कहा कि सत्तारूढ़ एनडीए सरकार सत्ता हासिल करना चाहती है ताकि सदन में साधारण बहुमत से किसी भी परिसीमन कानून को पारित या संशोधित किया जा सके। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सांसद लोकसभा में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक और परिसीमन विधेयक का विरोध इसलिए कर रहे हैं क्योंकि इसमें परिसीमन का प्रावधान है। संसद परिसर से एएनआई को संबोधित करते हुए खरगे ने कहा कि हम महिला विरोधी नहीं हैं और हम लंबे समय से एक तिहाई महिला आरक्षण के लिए काम कर रहे हैं। हमने सर्वसम्मति से 023 के संशोधन का समर्थन किया और उसे पारित कराया। हालांकि, इसकी आड़ में उन्होंने एक और संशोधन पेश किया, जिसमें परिसीमन का प्रावधान जोड़कर महिला आरक्षण और परिसीमन विधेयकों को समेकित कर दिया गया है। उन्होंने आगे कहा कि भाजपा संविधान की संरचना को बदलना चाहती है और कार्यपालिका शक्ति को अपने हाथों में लेना चाहती है। उन्होंने कहा कि इन तीनों विधेयकों को एक साथ लाकर वे सत्ता हासिल करना चाहते हैं ताकि किसी भी परिसीमन कानून को साधारण बहुमत से सदन में पारित और संशोधित किया जा सके... आपको यह 543 सदस्यों के भीतर करना चाहिए। अगली जनगणना या जाति जनगणना पूरी होने के बाद, आप इसे अगले चुनाव में पूरा कर सकते हैं... आपका इरादा संविधान की संरचना को बदलना और कार्यपालिका शक्ति को अपने हाथों में लेना है।

लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने की साजिश रच रही थी सरकार : प्रियंका गांधी

लोकसभा में संविधान (131वां संशोधन) विधेयक पारित न होने के बाद कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी ने सरकार पर तीखा हमला बोला है। प्रेस कॉन्फ्रेंस में उन्होंने कहा कि जो कुछ हुआ, वह लोकतंत्र और संविधान की बड़ी जीत है। प्रियंका गांधी ने आरोप लगाया कि सरकार संघीय ढांचे को कमजोर करने और लोकतंत्र को नुकसान पहुंचाने की साजिश रच रही थी, जिसे विपक्ष ने मिलकर विफल कर दिया। उन्होंने आगे कहा कि सरकार किसी भी तरह सत्ता में बने रहने की रणनीति बना रही है और इसके लिए महिलाओं के मुद्दे का इस्तेमाल करने की कोशिश की जा रही है। उनके मुताबिक, सरकार की सोच थी कि अगर बिल पास हो जाता तो उसे राजनीतिक फायदा मिलता, और अगर नहीं होता तो वह अन्य दलों को महिला विरोधी बताकर खुद को महिलाओं का मसीहा दिखाने की कोशिश करती। प्रियंका गांधी ने कहा कि महिलाओं का मसीहा बनना आसान नहीं है और सरकार की मंशा पर सवाल उठाते हुए उन्होंने इसे एक राजनीतिक रणनीति करार दिया। केंद्र की नीतियों पर सवाल उठाते हुए उन्होंने कहा कि सरकार के हालिया फैसलों में अंतरराष्ट्रीय दबाव साफ दिखता है। अमेरिका के साथ हुए समझौते का जिक्र करते हुए उन्होंने कहा कि ऐसी शर्तें सामान्य परिस्थितियों में कोई भी भारतीय प्रधानमंत्री स्वीकार नहीं करता।महंगाई को लेकर भी उन्होंने सरकार को घेरा। प्रियंका गांधी ने कहा कि गैस, फल-सब्जियों और रोजमर्रा की वस्तुओं की बढ़ती कीमतों का सबसे ज्यादा बोझ महिलाओं पर पड़ रहा है। उनके मुताबिक, सरकार इन मुद्दों से ध्यान हटाने के लिए राजनीतिक गतिविधियों और प्रचार का सहारा ले रही है।

पीएम मोदी के प्रयासों को झटका : ललन सिंह

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। केंद्रीय मंत्री राजीव रंजन सिंह ने शनिवार को लोकसभा में संविधान (एक सौ इकतीसवां संशोधन) विधेयक, 26 के पारित न हो पाने के बाद विपक्ष की आलोचना करते हुए आरोप लगाया कि कांग्रेस पार्टी ने महिला सशक्तिकरण के उद्देश्य से शुरू की गई एक महत्वपूर्ण पहल में बाधा डाली है और जोर देकर कहा कि महिला मतदाता इस घटनाक्रम पर राजनीतिक प्रतिक्रिया देंगी।

» जदयू नेता बोले कांग्रेस ने महत्वपूर्ण पहल में बाधा डाली

विपक्ष के नेता राहुल गांधी द्वारा विधेयक की हार को लोकतंत्र की जीत करार देने पर प्रतिक्रिया व्यक्त करते हुए सिंह ने कहा कि विपक्ष उस ऐतिहासिक पहल को झटका दे रहा है जिसे उन्होंने महिलाओं के प्रतिनिधित्व के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा शुरू की गई पहल बताया। सिंह ने बताया कि विपक्ष का कहना है कि इस विधेयक का गिरना एक ऐतिहासिक कदम है। उनके अनुसार, यह ऐतिहासिक इसलिए है क्योंकि उन्होंने देश में महिला सशक्तिकरण के लिए प्रधानमंत्री के प्रयासों को विफल कर दिया है। उन्होंने कहा कि प्रस्तावित विधेयक का उद्देश्य संसद में 33 प्रतिशत आरक्षण प्रदान करके देश की लगभग आधी आबादी वाली महिलाओं को न्याय दिलाना था। आधी आबादी महिलाएं हैं, और संसद में उन्हें 33 प्रतिशत आरक्षण देना उनके साथ न्याय करने की दिशा में उठाया गया कदम था। अब वे इसे गिराकर बड़ी संतुष्टि महसूस कर रहे हैं। कांग्रेस पार्टी को निशाना बनाते हुए केंद्रीय मंत्री ने आरोप लगाया कि उसने तिहासिक रूप से प्रमुख सामाजिक सुधारों का विरोध किया है। सिंह ने कहा कि यह कांग्रेस का चरित्र है। उन्होंने हमेशा समाज में सामाजिक परिवर्तन या सामाजिक क्रांति के कदमों को रोकने की कोशिश की है।

नोएडा के बाद हापुड़ में भड़के श्रमिक, वेतन बढ़ाने की मांग को लेकर फूटा गुस्सा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पिलखुवा (हापुड़)। हापुड़ के कोतवाली क्षेत्र स्थित दो कंपनी में काम करने वाले कर्मचारियों का गुस्सा वेतन बढ़ोतरी को लेकर फूट पड़ा। कर्मचारियों ने एकजुट होकर अचानक विरोध प्रदर्शन शुरू कर दिया, जिससे मौके पर अफरा-तफरी मच गई और कामकाज प्रभावित हो गया। स्थिति तेजी से बिगड़ने पर पुलिस प्रशासन मौके पर पहुंचा और हालात को नियंत्रित किया।

कर्मचारियों ने बताया कि लंबे समय से वेतन बढ़ाने की मांग लगातार उठाई जा रही है, लेकिन प्रबंधन की ओर से इस पर कोई ठोस कदम नहीं उठाया गया। इसी अनदेखी से नाराज होकर कर्मचारियों ने विरोध का रास्ता अपनाया और जमकर नारेबाजी की। कर्मचारियों का कहना है कि मौजूदा वेतन में गुजारा करना मुश्किल हो रहा है और बार-बार मांग रखने के बावजूद सुनवाई नहीं हो रही है। विरोध के दौरान कर्मचारियों का कहना हैं कि जब तक वेतन बढ़ोतरी को लेकर ठोस निर्णय नहीं लिया जाएगा, तब तक उनका विरोध जारी रहेगा।

होर्मुज पर खत्म नहीं हो रही तनातनी!

» अमेरिकी नाकाबंदी की वजह से वापस लौटे 21 जहाज, ईरान ने दी चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। अमेरिका-ईरान के बीच सीजफायर की डेडलाइन जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, वैसे-वैसे होर्मुज स्ट्रेट को लेकर तनातनी फिर से बढ़ने लगी है। फिलहाल होर्मुज खुलने की घोषणा के बीच ईरान की इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉपर्स नेवी ने होर्मुज स्ट्रेट को पार करने की कोशिश कर रहे जहाजों के लिए कुछ शर्तें तय की हैं।

एक्स पर एक पोस्ट में कहा गया है कि सभी तरह के आवागमन के लिए इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स नेवी से अनुमति लेना जरूरी है। नागरिक जहाजों को केवल ईरान द्वारा तय किए गए रास्ते से गुजरने की अनुमति है, जबकि सैन्य जहाजों के वहां से गुजरने पर अभी भी रोक है। अगर इजाजत नहीं ली जाती है तो इसे फिर से बंद कर दिया जाएगा। आईआरजीसी नेवी ने इन शर्तों को एक नई व्यवस्था बताया और कहा कि यह सीजफायर समझौते की शर्तों अनरूप है। हालांकि, इस बयान में उन विवरणों का जिक्र है जिन्हें अराघची ने तब स्पष्ट नहीं किया था, जब उन्होंने यह घोषणा की थी कि संघर्ष-विराम के दौरान सभी वाणिज्यिक जहाजों के लिए मार्ग पूरी तरह से खुला है। उन्होंने कहा था, लेबनान में संघर्ष-विराम के अनुरूप होर्मुज स्ट्रेट से सभी वाणिज्यिक जहाजों के गुजरने का मार्ग, संघर्ष-विराम की शेष अवधि के लिए पूरी तरह से खुला घोषित किया जाता है।

तमिलनाडु में भीषण सड़क हादसा, केरल के 9 शिक्षकों की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चेन्नई। तमिलनाडु के सेलम जिले में शनिवार को एक दर्दनाक सड़क हादसे ने सबको झकझोर कर रख दिया। सेलम-कोयंबटूर नेशनल हाईवे पर एक सरकारी बस के अनियंत्रित होकर सड़क से उतरने और कई वाहनों से टकराने के कारण कम से कम नौ लोगों की मौत हो गई। मारे गए सभी लोग पेशे से शिक्षक थे और केरल के मलप्पुरम जिले के रहने वाले थे।

समाचार एजेंसी ृह्ढ की रिपोर्ट के अनुसार, इस हादसे में जिन लोगों की जान गई, वे सभी पेशे से शिक्षक थे। ज़िला कलेक्टर के दफ़्तर से जारी एक बयान के मुताबिक, बस कोयंबटूर से सेलम की ओर जा रही थी। 13वें हेयरपिन मोड़ पर ड्राइवर का बस से कंट्रोल हट गया, जिसके बाद बस अचानक सड़क से उतर गई। बस एक दोपहिया वाहन और एक ऑटो-रिक्शा से टकरा गई, जिसमें करीब 10 यात्री सवार थे।

इसके बाद बस 9वें हेयर मोड़ पर नीचे गिर गई। बस में केरल के पेरिनथलमान्ना से आए 13 टूरिस्ट सवार थे। इन 13 लोगों में से आठ लोगों (1 पुरुष और 7 महिलाएं) की मौके पर ही मौत हो गई। पांच घायल लोगों को, जिनमें ड्राइवर, 17 से 18 साल के दो लड़के और दो महिलाएं शामिल थीं, तुरंत बचाकर पोल्लाची के सरकारी अस्पताल ले जाया गया। घायलों में से एक ने बाद में इलाज के दौरान दम तोड़ दिया। तमिलनाडु के सरकारी अधिकारियों ने इस घटना पर तुरंत कार्रवाई की। हादसे की खबर मिलते ही, दो सीनियर पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और बचाव और राहत कार्यों की देखरेख की। घायलों को तुरंत निकालने के लिए फायर एंड रेस्क्यू सर्विस के कर्मचारियों को भी तैनात किया गया।

पीएम और केरल के सीएम ने मौतों पर दुख जताया

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस हादसे में हुई मौतों पर गहरा दुख व्यक्त किया।प्रधानमंत्री कार्यालय ने एक्स पर लिखा, तमिलनाडु के कोयंबटूर में हुए हादसे के बारे में सुनकर बहुत दुख हुआ। मैं उन लोगों के प्रति अपनी गहरी संवेदना व्यक्त करता हूं, जिन्होंने इस हादसे में अपने प्रियजनों को खो दिया है। घायलों के जल्द ठीक होने की प्रार्थना करता हूं। केरल के मुख्यमंत्री पिनाराई विजयन ने भी केरल के नागरिकों की मौत पर अपनी संवेदना व्यक्त की। विजयन ने अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने के निर्देश भी दिए कि सभी घायल लोगों को सबसे अच्छा इलाज मिले।

महाराष्ट्र कार्यालय :- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। विधि सलाहकार : मोहम्मद हैदर
*इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी।
RNI-UPHIN/2015/62233, दूरभाष : 0522- 4078371 | Email : daily4pm@gmail.com | website: www.4pm.co.in |
समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए
मुद्रक एवं प्रकाशक संजय शर्मा
द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित
पता 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। संपादक- संजय शर्मा